नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

सत्यमेव जयते

नराकास रत्नागिरी

राजभाषा

रत्नसिंधु

हिंदी छमाही पत्रिका | अंक : 26 | जून 2026

काव्य विशेषांक

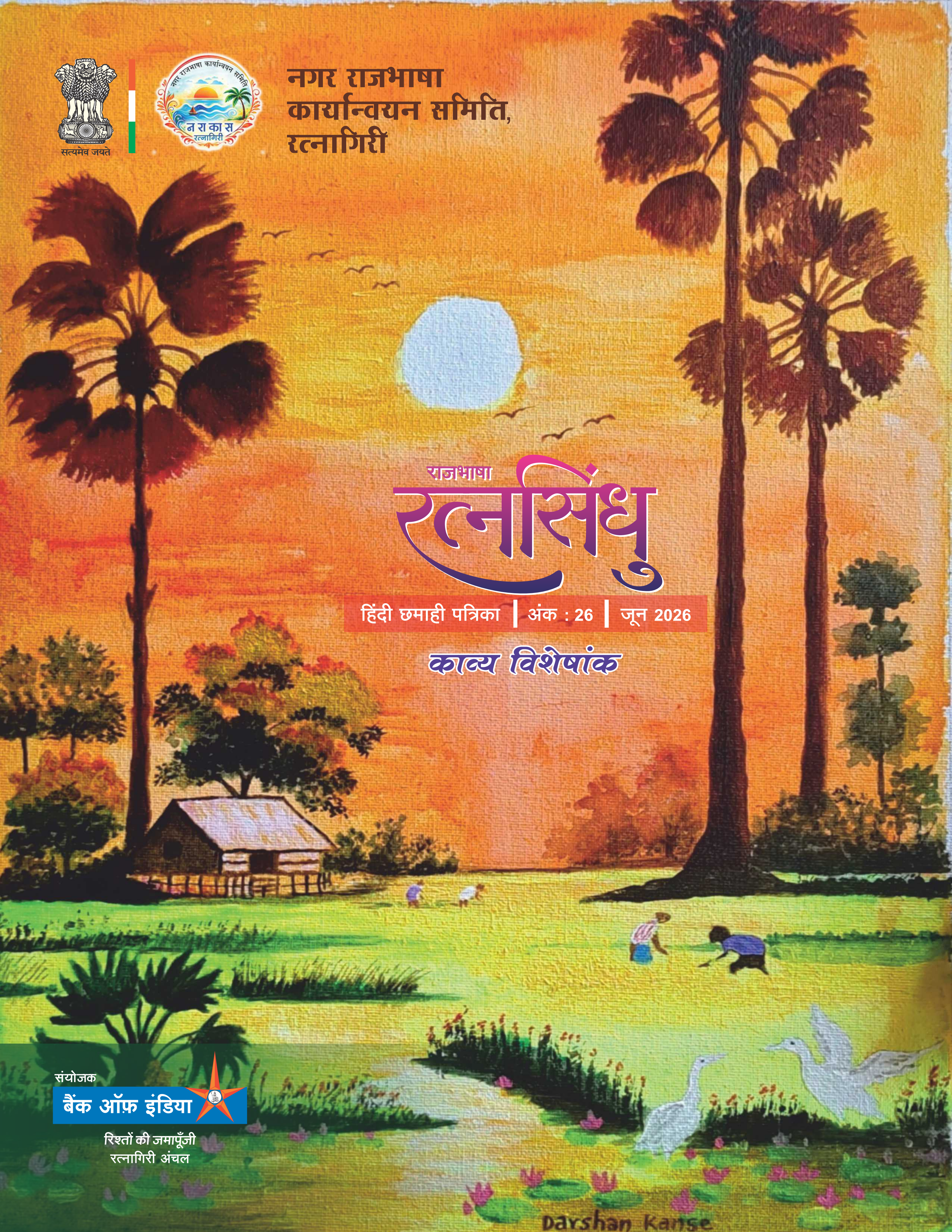

संयोजक

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

रत्नागिरी अंचल

आपका हार्दिक स्वागत

उप महानिरीक्षक कुणाल नाईक
कमान अधिकारी,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान, रत्नागिरी

श्री ज्ञानेश कुलकर्णी
डाकघर अधीक्षक,
रत्नागिरी.

श्री एकनाथ पाटील
आयकर अधिकारी,
रत्नागिरी.

श्री राहुल लेकुरवाळे
वरिष्ठ प्रबंधक,
यूको बैंक, रत्नागिरी

श्री अमित श्रीकृष्ण शेट्ये
शाखा प्रबंधक,
इंडियन ओवरसीज बैंक, रत्नागिरी

श्री पवन वर्मा
शाखा प्रमुख,
केनरा बैंक, रत्नागिरी

श्री शिव कुमार झा
क्षेत्रीय प्रबंधक,
भारतीय स्टेट बैंक, रत्नागिरी

श्री रोबिउल आलम
शाखा प्रबंधक,
पंजाब एन्ड सिंध बैंक, रत्नागिरी

श्री योगेन्द्र वाव्हळे
शाखा प्रबंधक,
इंडियन बैंक, रत्नागिरी

श्री राहुल सरपे
मुख्य प्रबंधक,
बैंक ऑफ़ बडौदा, रत्नागिरी

श्री हरिभाऊ काळे
वरिष्ठ प्रबंधक,
सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, रत्नागिरी

अध्यक्षीय संबोधन

प्रिय साथियो,

सर्वप्रथम सभी को सादर नमस्कार।

अपनी समिति की हिंदी पत्रिका राजभाषा रत्नसिंधु का 26 वां अंक आपके हाथ सौंपते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। अपने विचारों का आदान–प्रदान करने का अवसर हमें इस हिंदी पत्रिका के माध्यम से उपलब्ध हो रहा है। अपनी प्रतिभा को उजागर करने का एक बड़ा माध्यम अपने पास है।

समिति हमेशा अपनी छमाही पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' द्वारा विभिन्न विषयों को लेकर आपके सामने प्रस्तुत करती है। 26 वें अंक में हमने तकनीकी विषयों को अधिक से अधिक सम्मिलित करने का प्रयास किया है। हमारी समिति हमेशा राजभाषा कार्यान्वयन को प्राथमिकता देती है। आप सभी के सकारात्मक रवैये के कारण ही समिति विभिन्न ऊंचाईयों को हासिल कर रहीं है।

समिति राजभाषा के साथ–साथ सामाजिक दायित्व का भी निर्वाहन कर रहें है। केंद्र सरकार के निदेशानुसार वित्तीय समावेशन के कार्य में सहभागिता कर रहीं हैं। रिजर्व बैंक द्वारा निर्देशित तथा अग्रणी जिला कार्यालय द्वारा आयोजित संपृक्तता शिविरों को सहयोग करके समिति ने अपनी उपस्थिति दर्ज की है। जागतिक पर्यावरण दिवस के सुअवसर पर नराकास वृक्ष मित्र मंच नराकास रत्नागिरी वृक्षारोपण मंच के तह्त बहुत से सदस्य कार्यालयों ने वृक्षारोपण किया तथा प्लास्टिक बंदी लगा दी। समिति द्वारा सभी कार्यालयों को आवाहन करने साथ ही हमें समय–समय पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम) की ओर से मार्गदर्शन भी मिलता रहता है। इनके मार्गदर्शन में हमारी समिति ख क्षेत्र में बड़ी–बडी ऊंचाइयां हासिल कर रही है।

समिति विशेष विषय–विचारों को लेकर ई पत्रिका प्रेरणा का भी प्रकाशन करती है। समिति इसी शृंखला में नवोन्मेषी प्रयोगों को अपनाकर सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन तथा आपके सहयोग से शीर्ष स्थान हासिल करते रहेगी।

पुनः आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

(नरेंद्र रघुनाथ देवरे)
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,रत्नागिरी

संपादकीय...

साथियों,

आप सभी को सविनय नमस्कार,

हमारी पत्रिका राजभाषा रत्नसिंधु का नवीनतम काव्य विशेषांक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे आनंद हो रहा है। समिति राजभाषा रत्नसिंधु पत्रिका को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है। राजभाषा रत्नसिंधु के पिछले अंक में सम्मिलित आलेख, काव्य पर बहुत से पाठकों ने अपनी प्रतिक्रियाएं दी हैं। आपकी प्रतिक्रियाओं ने हमें पत्रिका में विविधता लाने के लिये उत्साहित किया है, इसके लिए हम आपके आभारी हैं।

समिति का संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 9 अप्रैल,2026 को निरीक्षण हो गया जिसमें समिति के राजभाषा कार्यान्वन का सराहाया गया।

समिति द्वारा आयोजति विश्व हिंदी दिवस समारोह, तृतीय हिंदी कवि सम्मेलन तथा नराकास खेलकुद शील्ड योजना में सभी सदस्य कार्यालयों ने बड़े उत्साह से सहभागिता दर्ज की। हिंदी कवि सम्मेलन के आयोजक कार्यालय भारतीय तटरक्षक अवस्थान तथा नराकास खेलकुद शील्ड योजना के अंतर्गत क्रिकेट टूर्नामेंट के आयोजक कार्यालय कोंकण रेलवे ने सुंदर आयोजन किया। उनका समिति की ओर से आभार व्यक्त करता हूं। नराकास राजभाषा शील्ड पुरस्कार में विजेताओं का हार्दिक अभिनंदन।

समिति हमेशा नवोन्मेषी प्रयोग को अपना रहीं है और उसमें बडे पैमाने पर सफलता पा रहें है। इसका पूरा श्रेय आप सभी सदस्य कार्यालयों को जाता है। इन्हीं प्रयासों को हम आगे जारी रखेंगे। पिछली बैठक में लिए गए सभी निर्णयों पर हमने कार्रवाई की है, उसका अनुपालन सुनिश्चित किया गया है। सभी कार्यालयों में राजभाषा प्रभारियों को नामित किया गया है, उनके लिए तकनीकी राजभाषा प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। समिति सभी निर्णयों का अनुपालन करने में सफल रही क्योंकि सभी आयोजनों के प्रति सदस्य कार्यालयों का दृष्टिकोण हमेशा की तरह सकारात्मक रहा।

जागतिक पर्यावरण दिवस के अवसर पर नराकास वृक्ष मित्र मंच के अंतर्गत सदस्य कार्यालयों ले अपने कार्यालय के परिसर में वृक्षारोपण करके जागतिक पर्यावरण दिवस मनाया। सदस्य कार्यालयों के स्थापना दिवस पर उनके कार्यालय में जाकर अध्यक्ष महोदय जी ने स्वयं जाकर शुभकामना दी और राजभाषा कार्यान्वन के बारें में जानकारी प्राप्त की। आगामी दिनों में विभिन्न कार्य प्रारंभ हो जाएंगे। इसी दौरान वृक्षारोपण, पौधे वितरण, हर–घर तिरंगा के अंतर्गत नराकास बाइक रैली, नेत्र चिकित्सा शिविर, स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर आदि. समारोहों का आयोजन किया जाएगा।

राजभाषा रत्नसिंधु का नवीनतम अंक आपको जरूर पसंद आएगा। पत्रिका को और अधिक पठनीय बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

आपका,

शुभ कामनाओं सहित,
धन्यवाद।

(रमेश गायकवाड)
सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा
रत्नसिंधु
काव्य विशेषांक

अध्यक्ष
श्री नरेंद्र रघुनाथ देवरे
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक,
बैंक ऑफ़ इंडिया

संपादक
रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव
एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा,
बैंक ऑफ़ इंडिया

संपादन सहयोग
संतोष पाटोळे
कोंकण रेलवे

चंद्रकांत कुमार
भारतीय तटरक्षक अवस्थान

गौरांग कुर्टे
सीमा शुल्क मंडल कार्यालय

अक्षय माईन
न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी

अनिकेत पवार
अधीक्षक डाक कार्यालय

ललित प्रकाश
रत्नागिरी दीपस्तंभ

मुखपृष्ठ
श्री. दर्शन कानसे
बैंक ऑफ़ इंडिया

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के हैं। अतः यह आवश्यक नहीं की इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो।

अंतरंग

1 भाषा के भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका 1

2 सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी 5

3 भाषा समाज का दर्पण 9

4 भारतीय तटरक्षक बल की जांबाजी 11

5 महिला सक्षमीकरण 12

6 रत्नागिरी की जलवायु : एक भौगोलिक और वैज्ञानिक विश्लेषण 14

7 वैश्विक ऊर्जा संकट 16

8 समुद्री सुरक्षा 18

9 ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम (जीपीएस) 20

10 मेडिकल कोडिंग स्वास्थ्य सेवा उद्योग 22

संपर्क कार्यालय : अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, रत्नागिरी महाराष्ट्र - 415 639.
ई-मेल – Tolic.Ratnagiri@bankofindia.co.in, वेबसाइट - http://narakasratnagiri.co.in.

भाषा के भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव सभ्यता के इतिहास में एक ऐसे मोड़ की शुरुआत की है, जहाँ भाषा, संप्रेषण और ज्ञान की संपूर्ण संरचना पुनर्परिभाषित हो रही है। भाषा मनुष्य की सबसे पुरानी और प्रभावशाली तकनीक है, जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक युग की सबसे परिवर्तनकारी वैज्ञानिक उपलब्धि। जब ये दोनों एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, तो न केवल अभिव्यक्ति के नए आयाम खुलते हैं, बल्कि स्वयं मानव विचार, संज्ञान, रचनात्मकता और सामाजिक संरचनाएँ भी प्रभावित होती हैं। आज हम ऐसे समय में हैं जहाँ भाषा मॉडल न केवल संवाद कर रहे हैं, बल्कि सीख रहे हैं, समझ रहे हैं, व्याख्या कर रहे हैं और कुछ हद तक रचनात्मकता भी प्रदर्शित कर रहे हैं। आने वाले वर्षों में यह समझना आवश्यक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा एक दूसरे को कैसे रूपांतरित करेंगे और इन परिवर्तनों से भविष्य कैसा आकार लेगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आरंभ मानव विचार प्रक्रियाओं की नकल करने की अवधारणा से हुआ था। शुरुआती प्रणालियाँ तर्क, नियमों और गणनाओं पर आधारित थीं। भाषा को इसमें केवल एक इनपुट-आउटपुट तत्व माना जाता था। लेकिन पिछले दशक में न्यूरल नेटवर्क और डीप लर्निंग के विकास ने भाषा को एक बिल्कुल नया महत्व दे दिया। भाषा को अब मानव संज्ञान का केंद्र माना जाने लगा और भाषा मॉडल विकसित करते हुए वैज्ञानिकों ने पाया कि मानवीय बुद्धि का सबसे गहरा आधार भाषा ही है। इसी के कारण भाषा-आधारित कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल आज स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान, मनोरंजन, नीति-निर्धारण और अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में अविश्वसनीय योगदान दे रहे हैं।

भाषा मॉडल्स की कार्यक्षमता शब्दों की भविष्यवाणी से शुरू होती है, परंतु धीरे-धीरे वे संदर्भ समझने, भावनाओं की पहचान करने, सांस्कृतिक संकेतों को ग्रहण करने और बहुभाषिक परिवेश में अपनी भूमिका निभाने में सक्षम हुए। इन मॉडलों की शक्ति विशाल डेटा से आती है, जो मानव समाज की भाषाई विविधता, अनुभवों और ज्ञान का एक संक्षिप्त रूप होता है। इस कारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता न केवल भाषा को संसाधित करता है, बल्कि उसके माध्यम से मानवता की सामूहिक स्मृति और व्यवहारों की संरचना को भी समझने लगा है। भविष्य में यह समझ और गहरी होगी, जिससे भाषा मॉडल न केवल संचार का माध्यम बनेंगे बल्कि मानव-मानव और मानव-मशीन संबंधों के बीच एक पुल का काम करेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा का एक प्रमुख प्रभाव यह है कि अब तकनीक केवल आदेश आधारित नहीं रही, बल्कि संवाद-आधारित हो गई है। पहले तकनीक के साथ बातचीत एकतरफा होती थी। उपयोगकर्ता आदेश देता था और मशीन प्रतिक्रिया देती थी। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ वार्तालाप में शामिल होती हैं, प्रश्न पूछती हैं, सुझाव देती हैं, तर्क प्रस्तुत करती हैं और कभी-कभी उपयोगकर्ता के उद्देश्यों और प्राथमिकताओं का अनुमान भी लगा लेती हैं। यह संवादात्मक क्षमता भविष्य में और विकसित होगी, जिससे डिजिटल प्रणालियाँ अधिक मानवीय प्रतीत होंगी।

भविष्य में भाषा का पूर्णतः व्यक्तिगत अनुकूलन संभव होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सभी उपयोगकर्ताओं के भाषा पैटर्न, बोलियों, संदर्भों और शैली को सीखकर उनके अनुसार संवाद करेगा। इससे भाषा एक अधिक गतिशील और व्यक्तिगत माध्यम बन जाएगी। लोग जिस तरह बोलते हैं, लिखते हैं या सोचते हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता उसी रूप में बातचीत करेगा। इसका व्यापक प्रभाव शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, मनोरंजन और प्रशासन के क्षेत्रों में दिखाई देगा। उदाहरण के लिए, सीखने वाले छात्रों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता व्यक्तिगत शिक्षक की भूमिका निभा सकेगा, जो उनकी भाषाई क्षमता और समझ के स्तर को ध्यान में रखते हुए सामग्री तैयार करेगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषाई विविधता को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। आज दुनिया की हजारों भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं क्योंकि उन्हें बोलने वालों की संख्या तेजी से घट रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित मॉडल उन भाषाओं को सहेजने, पुनर्जीवित करने और नई पीढ़ियों तक पहुँचाने में सहायता कर सकते हैं। यदि किसी भाषा के पर्याप्त नमूने उपलब्ध

हों, तो मॉडल उस भाषा की व्याकरणिक संरचना, शब्दावली और उच्चारण पैटर्न को सीख सकता है और उस भाषा में संवाद करना शुरू कर सकता है। यह तकनीक मानव भाषाओं की सांस्कृतिक विरासत को दीर्घकालिक रूप से सुरक्षित रखने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन साबित होगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुवाद प्रणालियों का विकास भाषा की सीमाओं को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भविष्य में वास्तविक समय अनुवाद इतना सहज और सटीक हो सकता है कि विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले मानव समूह बिना किसी बाधा के संवाद कर सकेंगे। इससे न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ेगा, बल्कि वैश्विक व्यापार, पर्यटन, शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में नई संभावनाएँ खुलेंगी। भाषा अब बाधा नहीं, बल्कि वैश्विक सहयोग का माध्यम बनेगी। यह परिवर्तन इंटरनेट के बाद मानव इतिहास का सबसे बड़ा संचार क्रांति होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा का भविष्य केवल संचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान निर्माण और रचनात्मकता के नए रूपों को भी जन्म देगा। भाषा मॉडल कहानी लिखना, कविता रचना, संगीत के बोल तैयार करना, फिल्म की पटकथा बनाना और वैज्ञानिक लेख तैयार करना जैसी रचनात्मक गतिविधियों में सक्षम हो रहे हैं। आगे चलकर यह रचनात्मकता और उन्नत होगी, जहाँ मनुष्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिलकर सह रचनाकार के रूप में काम करेंगे। इससे साहित्य, कला और विज्ञान की पूरी संरचना बदल सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भाषा-आधारित क्षमताएँ मानव समाज के राजनीतिक और प्रशासनिक ढाँचे को भी रूपांतरित करेंगी। भविष्य में प्रशासनिक दस्तावेज़ों, कानूनों, नीतियों और सरकारी सेवाओं का कृत्रिम बुद्धिमत्ता चालित भाषा प्रसंस्करण के माध्यम से तेज, सटीक और पारदर्शी रूप से निर्माण होगा। लोग अपनी स्थानीय भाषाओं में सरकारी सेवाओं तक पहुँच प्राप्त कर सकेंगे। यह लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को अधिक समावेशी बनाएगा। हालांकि इसके साथ गोपनीयता, डेटा-सुरक्षा और दुरुपयोग की आशंकाएँ भी बढ़ेंगी, जिनके लिए मजबूत नीतिगत ढाँचों की आवश्यकता होगी।

भविष्य में भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की साझेदारी संज्ञानात्मक-विज्ञान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति लाएगी। भाषा मॉडल मानव मनोविज्ञान, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और सामाजिक व्यवहारों को समझने में नए उपकरण प्रदान करेंगे। इससे मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आएंगे, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता व्यक्तिगत परामर्श, भावनात्मक विश्लेषण और व्यवहारिक सुझाव देने में सक्षम होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा का यह विकास मानव रोजगार संरचना को भी प्रभावित करेगा। भाषा-आधारित कार्य, जैसे अनुवाद, सामग्री निर्माण, संपादन, कानूनी दस्तावेज़ तैयार करना और ग्राहक सेवा का स्वचालन तेज़ी से बढ़ेगा। इसके साथ नए पेशे भी जन्म लेंगे कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रशिक्षक, भाषा मॉडल विशेषज्ञ, डिजिटल भाषाविद् और मानव कृत्रिम बुद्धिमत्ता सह रचना के विशेषज्ञ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य में भाषाई नैतिकता का एक नया अध्याय स्थापित करेगा। भाषा मॉडल क्या कह सकते हैं, क्या नहीं कह सकते, किस संदर्भ में कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए। ये सभी प्रश्न महत्वपूर्ण होंगे। भाषा पर आधारित कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों में पूर्वाग्रह का खतरा भी रहता है, क्योंकि वे मानव समाज के पक्षपाती डेटा पर प्रशिक्षित होते हैं। इस चुनौती का समाधान करने के लिए डेटा के संतुलन, मॉडल की पारदर्शिता और नैतिक निगरानी की आवश्यकता होगी।

अंततः, भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य मानव और मशीन के बीच एक सहजीवी संबंध की ओर बढ़ रहा है। भाषा वह माध्यम बनेगी जिसके द्वारा मानव मशीनों को अपने विचार, भावनाएँ और कल्पनाएँ सौंपेगा। और कृत्रिम बुद्धिमत्ता उन्हें नए रूप में वापस मानवता को लौटाएगा। यह संबंध मानव सभ्यता के बौद्धिक विस्तार की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। भविष्य में भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं रहेगी। वह मानव

और मशीन दोनों की बुद्धिमत्ता को जोड़ने वाली एक सजीव कड़ी बन जाएगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा के भविष्य की समझने के लिए आवश्यक है कि हम उन तकनीकी आधारों का भी गहन अध्ययन करें जिन पर यह संपूर्ण संरचना टिकी हुई है। आज के भाषा मॉडल ट्रांसफॉर्मर आर्किटेक्चर पर आधारित हैं, जो ध्यान-तंत्र यानी अटेंशन मैकेनिज़्म का प्रयोग करते हैं। यह तकनीक किसी वाक्य के हर शब्द के बीच के संबंध को समझने की क्षमता प्रदान करती है। जैसे-जैसे यह तकनीक आगे बढ़ रही है, मॉडल भाषा को अधिक बहुआयामी संदर्भों में समझने लगे हैं। सिर्फ शब्दों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि छवियों, ध्वनियों और अनुभवात्मक संकेतों के माध्यम से भी। इससे भाषा के अध्ययन का पूरा परिदृश्य बहु-आयामी रूप में विकसित हो रहा है। भविष्य के मल्टीमॉडल मॉडल मानवीय संवेदनाओं के अधिक निकट होंगे, जिससे संचार अधिक प्राकृतिक और सहज होगा।

इन मॉडलों की प्रगति के साथ एक नया क्षेत्र विकसित हो रहा है ज्ञान संलयन। यह तकनीक भाषाई डेटा को वैज्ञानिक शोध, तथ्यात्मक डेटाबेस और वास्तविक दुनिया के अनुभवों से जोड़ती है। इससे भाषा मॉडल केवल वाक्य संरचना या संदर्भ तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे वास्तविक तथ्यों के आधार पर प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने लगते हैं। भविष्य में यह क्षमता और उन्नत होकर भाषा को मानव ज्ञान के एक विस्तृत, गतिशील और परस्पर जुड़ी हुई प्रणाली में बदल देगी, जहाँ मॉडल न केवल भाषाई संरचनाओं को समझेंगे, बल्कि वैश्विक ज्ञान नेटवर्क के एक सक्रिय घटक की तरह काम करेंगे।

भाषा का यह विकास मानव कृत्रिम बुद्धिमत्ता सह-विकास के एक नए चरण का संकेत है। जैसे-जैसे मनुष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ संवाद करेगा, वैसे-वैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी मनुष्यों की भाषा, व्यवहार और अभिव्यक्ति के पैटर्न को अपनाएगा। इससे एक नए प्रकार की संयुक्त भाषा विकसित हो सकती है, जो न पूरी तरह मानवीय होगी, न पूरी तरह मशीन-जनित। यह भाषा गति, सटीकता, तार्किक संरचना और भावनात्मक अनुकूलन का अनूठा मिश्रण होगी। भविष्य में ऐसी भाषा प्रशासन, विज्ञान, प्रोग्रामिंग और वैश्विक सहयोग के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा का प्रभाव शिक्षा प्रणाली पर भी अत्यधिक गहन होगा। आने वाले वर्षों में व्यक्तिगत शिक्षण प्रणालियाँ विद्यार्थियों की के आधार पर शिक्षा प्रदान करेंगी। भाषा मॉडल विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति, विश्लेषण क्षमता, रुचि और सीखने की शैली के अनुसार सामग्री प्रस्तुत कर सकेंगे। इससे शिक्षा का लोकतंत्रीकरण होगा। जहाँ भाषा, आर्थिक स्थिति और सामाजिक पृष्ठभूमि किसी भी छात्र की सीखने की क्षमता में बाधा नहीं बनेंगी। शिक्षण सामग्री वास्तविक समय में अपडेट होती जाएगी और शिक्षकों को भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण से यह समझने में मदद मिलेगी कि कौन-सा छात्र किस क्षेत्र में अतिरिक्त सहायता चाहता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भाषा पर प्रभाव शोध जगत में भी दिखाई देगा। शोध लेखों का स्वचालित संक्षेपण, डेटा की भाषा आधारित व्याख्या, बहुभाषीय शोध-निर्माण और वैज्ञानिक अवधारणाओं का सरल भाषा में अनुवाद ज्ञान संप्रेषण को आसान बनाएगा। इससे वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय को अधिक सहयोग के अवसर मिलेंगे, और भाषा अब शोध के प्रसार में बाधा नहीं बनेगी। कई भाषाओं में उपलब्ध शोध डेटा अधिक वैज्ञानिकों और छात्रों को नवीनतम खोजों से जोड़ने में सक्षम होगा।

आने वाले समय में भाषा पहचान प्रणाली और भाव-विश्लेषण तकनीक और उन्नत होंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव भावनाओं के सूक्ष्म संकेतों को भाषा के माध्यम से पहचानने में सक्षम होगा। वाक्य की संरचना, शब्दों का चयन, स्वर-लहरी, गति और प्रसंग को समझते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता संवाद में भावनात्मक संवेदनशीलता प्रदर्शित करेगा। यह मानसिक स्वास्थ्य सहायता, परामर्श, ग्राहक सेवा और सामाजिक संपर्क के नए क्षेत्रों में उपयोगी होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भावनात्मक विश्लेषण मनुष्यों के बीच सहयोग बढ़ाने और संघर्ष स्थितियों का

समाधान निकालने में भी मदद कर सकता है।

इसके साथ ही, भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भविष्य में साइबर सुरक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाएगा। भाषा मॉडल जितने सक्षम होंगे, उतना ही उनका दुरुपयोग भी संभव होगा। गलत सूचना फैलाना, नकली सामग्री तैयार करना, धोखाधड़ी वाले संवाद बनाना और सामाजिक हेरफेर जैसी समस्याएँ उभर सकती हैं। इसलिए भविष्य में भाषाई कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास मजबूत सुरक्षा प्रोटोकॉल, सत्यापन-तंत्र और नैतिक ढाँचों के साथ होगा। यह सुनिश्चित करना आवश्यक होगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता जिम्मेदारीपूर्वक भाषा का प्रयोग करे और सामाजिक संरचना को मजबूत बनाए, न कि उसे कमजोर।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा प्रणालियाँ मानव समाज में पारदर्शिता भी बढ़ाएँगी। सरकारी नीतियों, वित्तीय दस्तावेज़ों, कानूनी अनुबंधों और चिकित्सा रिपोर्ट्स को सरल भाषा में परिवर्तित कर आम नागरिकों तक पहुँचाया जा सकेगा। इससे ज्ञान का केंद्रीकरण समाप्त होगा।

श्री. संतोष पाटोळे,
कोंकण रेलवे.

ज़िंदगी

उम्मीदों का एक हसीन सफ़र

कभी धूप की चादर, कभी यादों का साया,
शुक्र है कि ज़िंदगी ने हमें इस काबिल बनाया।

न कोई जल्दबाज़ी है, न बेजा कोई हसरत,
निखारने में खुद को, हमने ये हुनर सजाया।

जमाना तेज़ चलता है, तो चलने दो उसे,
हमने तो अपने ठहरे हुए कदमों में भी सुकून पाया।

कश्ती भले पुरानी हो, लहरें भी मुखालिफ़ हों,
तूफानों से टकराकर ही, हमने साहिल को बुलाया।

अँधेरों की बिसात क्या, जो रोक सकें रास्ता मेरा,
उम्मीदों के दीयों ने हर मोड़ पर साथ निभाया।

न किसी से होड़ अपनी, न किसी से गिला कोई,
अपनी मेहनत की लकीरों को ही, हमने मुकद्दर बनाया।

श्री. धनराज जाधव,
बैंक ऑफ़ इंडिया.

सतर्कताः हमारी साझा जिम्मेदारी

❊ प्रस्तावना और पृष्ठभूमि : मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में जीवन के सुचारू संचालन के लिए नियम, अनुशासन, नैतिक मूल्य और पारदर्शिता का पालन आवश्यक है। यदि ये आधारभूत तत्व कमजोर पड़ जाएँ, तो समाज में अराजकता, अन्याय और भ्रष्टाचार फैलने लगता है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, सतर्कता को समाज और राष्ट्र के लिए अनिवार्य गुण माना गया है।

सतर्कता केवल बाहरी निगरानी नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर की सजगता है। यह हमें सही और गलत का भान कराती है। सतर्कता का अर्थ है-अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदार होना, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना और हर उस कार्य के प्रति जागरूक रहना जो समाज, राष्ट्र और मानवता को प्रभावित करता है।

आज ''सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी'' केवल एक नारा नहीं, बल्कि समाज की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार, स्वार्थ और अनुशासनहीनता ने समाज की नींव हिला दी है। यदि हर नागरिक चुपचाप बैठकर सोचता रहे कि गलत को रोकना केवल सरकार या किसी संस्था का काम है, तो बुराइयाँ कभी खत्म नहीं होंगी। परंतु यदि हर व्यक्ति अपनी भूमिका निभाए, तो सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

❊ सतर्कता का महत्व :

1. भ्रष्टाचार-निरोध: भ्रष्टाचार विकास में सबसे बड़ी बाधा है और इसे रोकने के लिए सतर्कता एक अत्यंत प्रभावी उपाय है।
2. नैतिक मूल्यों की रक्षा: ईमानदारी, पारदर्शिता और न्याय को कायम रखने के लिए सतर्क रहना बहुत जरूरहै।
3. जनविश्वास की मजबूती: जब प्रशासन और नागरिक दोनों सजग हैं तभी लोगों का व्यवस्था पर विश्वास बना रहता है।
4. विकास की गति: संसाधनों का सही और प्रभावी उपयोग तभी संभव है जब समाज भ्रष्टाचार और लापरवाही से मुक्त हो।
5. यदि ध्यान न दिया जाए, तो भ्रष्टाचार और अपराध में वृद्धि होती है, लोगों का विश्वास कमजोर होता है और संसाधनों का अपव्यय होता है। इसलिए, सतर्कता केवल सरकार या किसी संस्था की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हम सभी की साझा जिम्मेदारी है।
6. सतर्कता का अर्थ, परिभाषा और दायरा
7. 'सतर्कता' शब्द भले ही छोटा प्रतीत होता है, लेकिन इसका अर्थ बहुत व्यापक और गहरा है। सामान्यतः सतर्कता का अर्थ है चौकस रहना, सचेत रहना और किसी भी प्रकार की गलत प्रवृत्ति की पहचान कर उसका विरोध करना। हालांकि, समाजशास्त्रीय और प्रशासनिक दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या और भी अधिक विस्तृत है।
8. सतर्कता का शाब्दिक अर्थ है 'सतर्क' शब्द, जो संस्कृत से आया है और इसका आशय सावधानी, ध्यान और चौकसी से है। इसी प्रकार, सतर्कता उस स्थिति को दर्शाती है जिसमें व्यक्ति हर परिस्थिति को गहराई से समझे, गलती या बुराई से अपने आप को और दूसरों को बचाने का प्रयास करे।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से, सतर्कता का मतलब है शासन में पारदर्शिता बनाए रखना, भ्रष्टाचार को रोकना और सार्वजनिक हितों की रक्षा करना।
सामाजिक दृष्टि: अन्याय और अपराध के खिलाफ आवाज उठाना, सामूहिक हित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखना।
व्यक्तिगत दृष्टि: जीवन में ईमानदारी, अनुशासन और दूसरों के अधिकारों का सम्मान सबसे महत्वपूर्ण है।

सतर्कता का दायरा अत्यंत व्यापक है :

राजनीतिक : चुनावी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और नेताओं का उत्तरदायित्व।

- आर्थिक: वित्तीय लेन-देन में ईमानदारी और कर चोरी पर नियंत्रण।
- सामाजिक: समानता और न्याय का समर्थन।
- पर्यावरणीय: प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।
- डिजिटल: साइबर अपराध, समाचार, और डेटा की सुरक्षा।
- नैतिक: व्यक्तिगत जीवन में चरित्र और आचरण की महत्वता।
- सतर्कता का विपरीत लापरवाही है। उदाहरण के लिए, यदि कार्यालय के कर्मचारी समय पर नहीं पहुँचते हैं और अधिकारी इसे नजरअंदाज करता है, तो रिश्वतखोरी और कामचोरी एक आम बात बन जाती है।

✻ भारतीय संस्कृति में सतर्कता : भारतीय संस्कृति में सतर्कता की भावना हमेशा से महत्वपूर्ण रही है। वेदों और उपनिषदों में 'सत्यमेव जयते' तथा 'धर्मो रक्षति रक्षितः' जैसे सूत्र सत्य और सतर्कता की रक्षा के महत्व को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। महाभारत में युधिष्ठिर का चरित्र व्यक्तिगत सतर्कता का आदर्श उदाहरण पेश करता है, जबकि श्रीकृष्ण की कूटनीति सामजिक और राजनीतिक सतर्कता को दर्शाती है। आधुनिक काल में महात्मा गांधी ने 'सत्य' और 'अहिंसा' के सिद्धांतों के साथ-साथ सतर्क नागरिकता के महत्व पर भी जोर दिया।

✻ इतिहास और भारतीय संदर्भ :

- वैदिक युग: इस काल में ऋषियों की जीवनशैली में आत्म-संयम और ईमानदारी की उच्च श्रेणी पाई जाती है।
- महाकाव्य: रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में नैतिक और राजनीतिक सतर्कता के उदाहरण प्रकट होते हैं।
- मौर्यकाल: चाणक्य की नीति में प्रशासनिक पारदर्शिता और भ्रष्टाचार के खिलाफ ठोस कदमों की बात की गई है।
- बौद्ध और जैन परंपरा: इस समय की शिक्षाएँ सम्यक दृष्टि, अहिंसा, और अपरिग्रह के सिद्धांतों पर आधारित हैं।
- मध्यकालीन भारत: संत और कवियों ने नैतिक जागरूकता पर जोर दिया है, जिससे समाज में मूल्य आधारित जीवन का प्रसार हुआ।
- स्वतंत्रता संग्राम: महात्मा गांधी, भगत सिंह, और सुभाषचंद्र बोस ने नैतिक और राजनीतिक सतर्कता को बढ़ावा दिया, जो कि स्वतंत्रता की लड़ाई का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी।

भारतीय संस्कृति की विशेषता-भारतीय संस्कृति में सतर्कता की परिकल्पना हमेशा 'साझी जिम्मेदारी' के रूप में देखी गई है। परिवार, मोहल्ला, गाँव और सम्पूर्ण समाज मिलकर व्यक्तियों को अनुशासन में रहने और बुराइयों से सावधान रहने की शिक्षा देते हैं। यही वजह है कि आज भी भारतीय संस्कृति में सामूहिक सतर्कता की गहरी छाप देखी जा सकती है।

✻ व्यक्तिगत जीवन में सतर्कता :
व्यक्तिगत जीवन में सतर्कता अपनाकर हम समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत बन सकते हैं। यह सतर्कता कई तरीकों से प्रकट होती है: परीक्षा में नकल से बचना, और ईमानदारी से अध्ययन करना।

✻ कार्यस्थल पर सतर्कता : अपने कार्य में ईमानदारी से समय का पालन करना, और सहकर्मियों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करना। आर्थिक जीवन में: वित्तीय लेन-देन में पारदर्शिता बनाए रखना, तथा अपनी कर जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाना।

✻ सामाजिक व्यवहार : यातायात नियमों का पालन, सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा, अपराध और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना।

नैतिकता और चरित्र: सदैव सत्य बोलना, दूसरों के अधिकारों का आदर करना, और स्वार्थ से दूर रहना। परिवार और समाज में सतर्कता का महत्व भी अत्यधिक है। परिवार में सदस्यों के प्रति सतर्क रहकर, हम उन मूल्यों का पालन करते हैं जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाते हैं। शासन और प्रशासन में सतर्कता - शासन और प्रशासनिक स्तर पर सचेतना किसी भी लोकतांत्रिक देश की सफलता केवल नागरिकों की जागरूकता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शासन और प्रशासन की सचेतना पर भी अत्यधिक निर्भर है। जब सरकारी तंत्र पारदर्शी, ईमानदार और जिम्मेदार होता है, तो जनता का विश्वास बनाए रखना संभव होता है, और इस तरह राष्ट्र की प्रगति होती है। इसके विपरीत, यदि शासन में लापरवाही या भ्रष्टाचार बढ़ने लगे, तो समाज में नकारात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है।

1. शासन में सतर्कता का महत्व : सरकार जनता के करों और संसाधनों से संचालित होती है। जब प्रशासनिक कार्य ईमानदारी से किए जाते हैं, तो नागरिकों का सरकार पर विश्वास बढ़ता है। शासन में हर नीति और निर्णय को जनता के हित में होना आवश्यक है।सतर्क प्रशासन ही विकास योजनाओं को समय पर पूरा कर सकता है।
2. प्रशासनिक सतर्कता के प्रमुख क्षेत्र : रिश्वतखोरी, कदाचार और संसाधनों के दुरुपयोग को रोकना। कर संग्रह, बजट और योजनाओं में पारदर्शिता। समय पर कार्य करना, सार्वजनिक

सेवाओं को प्राथमिकता देना। जाति, धर्म या वर्गभेद से ऊपर उठकर समानता पर ध्यान देना। ई-गवर्नेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्म द्वारा पारदर्शिता बढ़ाना।

३. भारत में सतर्कता तंत्र

● केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) : 1964 में स्थापित यह संस्था भ्रष्टाचार रोकने और प्रशासनिक पारदर्शिता के लिए एक मुख्य आधार है।

● लोकपाल और लोकायुक्त: जन शिकायतों और भ्रष्टाचार के मामलों की जांच के लिए।

● सीबीआई (Central Bureau of Investigation - CBI): प्रशासनिक और वैधानिक मामलों की जांच करने वाली प्रमुख एजेंसी है।

● आंतरिक सतर्कता विभाग: हर मंत्रालय और विभाग में एक विशेष सतर्कता प्रकोष्ठ होता है, जो कर्मचारियों पर नजर रखता है।

४. शासन में सतर्कता की चुनौतियाँ-कई बार प्रशासनिक संस्थाएँ राजनीतिक दबाव में कमजोर हो जाती हैं। नियम-कायदों की जटिलता के कारण आम नागरिक पारदर्शिता तक पहुँच नहीं पाता। अधिकारी-कर्मचारी और बाहरी तंत्र का गठजोड़ सतर्कता को कमजोर कर देता है। जनता का अपने अधिकारों और प्रक्रियाओं की जानकारी से वंचित रहना भी एक समस्या है।

✻ भ्रष्टाचार और सतर्कता का संबंध : भ्रष्टाचार और सतर्कता आपस में विपरीत हैं।

● सतर्कता जितनी अधिक, भ्रष्टाचार उतना कम।

● भ्रष्टाचार से प्रभावित समाज में शिक्षा, कानून और सामाजिक तंत्र प्रभावित होते हैं।

✻ युवाओं और शिक्षा जगत में सतर्कता : युवक एक राष्ट्र के भविष्य के निर्माता होते हैं। शिक्षा का उद्देश्य है - व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्यों की स्थापना और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना। विद्यालय और महाविद्यालय छात्र-छात्राओं को अनुशासन, समयपालन और ईमानदारी का महत्व सिखाते हैं। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, भ्रष्टाचार-रोधी प्रकल्प और सामाजिक सेवा जैसी गतिविधियाँ सतर्कता की भावना विकसित करती हैं। युवा पीढ़ी समाज का सबसे सक्रिय और ऊर्जावान हिस्सा है। यदि उन्हें सतर्क और जिम्मेदार बनाया जाए तो वे बदलाव के सबसे प्रभावी वाहक बन सकते हैं। युवा सामूहिक प्रयास से भ्रष्टाचार, नशाखोरी और अपराध को रोक सकते हैं। डिजिटल माध्यमों का सही उपयोग कर जागरूकता फैलाना। गरीबों और जरूरतमंदों के लिए सामाजिक कार्य करना और नैतिकता का संदेश देना।

✻ छात्र जीवन में सतर्कता : शिक्षा/परीक्षा और पाठ्यक्रम में ईमानदारी का पालन करना आवश्यक है, साथ ही मित्रों और सहपाठियों के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार भी करना चाहिए। मोबाइल और इंटरनेट का सही तरीके से और जिम्मेदारी से उपयोग अवश्य करना चाहिए। नशे या अन्य बुरी आदतों से दूर रहकर ही हम अपनी सेहत और भविष्य को सुरक्षित रख सकते हैं।छात्र यदि इन मूल्यों को अपनाएंगे तो वे न केवल व्यक्तिगत रूप से मजबूत होंगे, बल्कि समाज के लिए आदर्श भी बनेंगे।

● शिक्षा और सतर्कता : व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्य, जिम्मेदार नागरिक।

● युवा शक्ति : डिजिटल जागरूकता, सामाजिक कार्य, नशे और अपराध से बचाव।

● छात्र जीवन : ईमानदारी, अनुशासन, डिजिटल जिम्मेदारी।

● डिजिटल युग में युवा : साइबर सुरक्षा, फेक न्यूज और डेटा सुरक्षा।

✻ तकनीकी और डिजिटल सतर्कता :

● अर्थ : सुरक्षित इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग।

● खतरे : हैकिंग, फिशिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी, सोशल मीडिया उत्पीड़न।

● निवारक उपाय : सुरक्षित पासवर्ड, स्रोत की जाँच, अज्ञात लिंक से बचाव, साइबर कानून की जानकारी।

● राष्ट्रीय सुरक्षा : डिजिटल सजग नागरिक ही साइबर हमलों और फेक न्यूज से समाज सुरक्षित रख सकते हैं।

● सतर्कता के सामने चुनौतियाँ

●व्यक्तिगत : अधिकार और कर्तव्यों की जानकारी का अभाव,भय और सामाजिक दबाव।

सामाजिक : नियमों का पालन न होना, पिछड़े क्षेत्रों में जागरूकता की कमी।

प्रशासनिक : बाहरी दबाव, जटिल प्रक्रियाएँ, मानव संसाधन और तकनीकी साधनों की कमी।
डिजिटल : हैकिंग, फिशिंग, डेटा चोरी।
समाधान : शिक्षा और जागरूकता, सामाजिक सहभागिता, सख्त नियम और दंड, तकनीकी साधनों का उपयोग, साझा जिम्मेदारी।

*** उपाय और सुधार के मार्ग :**

1.व्यक्तिगत: आचरण और विचारों पर निगरानी, ईमानदारी, सुधार।
2.परिवार: बच्चों में नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना।
3.सामाजिक : स्थानीय सतर्कता अभियान, सामूहिक निगरानी।
4.प्रशासनिक : ई-गवर्नेंस, प्रशिक्षण, जवाबदेही।
5.शिक्षा : पाठ्यक्रम में नैतिकता, छात्र जागरूकता अभियान।
6.डिजिटल : साइबर सुरक्षा, फेक न्यूज़ सावधानी, सक्रिय नागरिकता।

*** जिम्मेदारी और निष्कर्ष :** सतर्कता केवल व्यक्तिगत प्रयासों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक साझा जिम्मेदारी भी है। इससे ईमानदारी और न्याय की नींव मजबूत होती है, भ्रष्टाचार और अपराध पर अंकुश लगता है, संसाधनों का उचित उपयोग होता है, और युवा पीढ़ी में जिम्मेदार नागरिकता का विकास होता है। सतर्कता एक निरंतर प्रक्रिया है। इसे हमारे व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक व्यवहार, शिक्षा, शासन और डिजिटल गतिविधियों के सभी पहलुओं में अपनाना आवश्यक है। केवल सतर्क नागरिक ही एक स्वस्थ और विकसित समाज का निर्माण कर सकते हैं। सतर्क रहकर हम न केवल अपने जीवन की बल्कि अपने राष्ट्र की भी भ्रष्टाचार, अपराध और अन्याय से मुक्त कर सकते हैं।

श्रीमती श्रेया शेखर काकडे,
कोंकण रेलवे.

युवा

मत बैठ मेरे भरोसे युवा मुझे तो देश चलाना है।
छोटी समस्याओ के लिए वक्त कहाँ
मुझे अमीरों को और अमीर बनाना है।

कौन सुने तुम्हारी जनसंख्या भी है भारी
तुम्हारी मदद करने पे बस हमें मिलती है वाह वाही

सिर्फ वाह वाही से देश कहाँ चल पाया है।
सरकार बनाने को हमने खूब पैसा बहाया है।

देश में जिंदा शासन प्रशासन है
पर गरीबों के बस कि बात नहीं
तुम फेंको पैसे सब मिल जाएगा ये इतना भी मुश्किल नहीं

माना देश सेवा के नाम पे हमने वोट मांगा है।
पर जेब हमे भी तो भरनी है।
हमने भी अपना सब कुछ दांव पे लगाया है।

बंट के रहोगे जब तक हिन्दू ऐसे ही छले जाओगे
हर पाँच साल बाद हम हाथ फैला के आएंगे
हर बार कि तरह अगली बार भी चंद
पैसे में बिक जाओगे।

* जय हिन्द *

श्री. रोहित कुमार राज,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

भाषा समाज का दर्पण

भाषा एक सामाजिक संस्था हैं जिसका उपयोग समाज की मानसिक और व्यवहारिक प्रक्रियाओं में किया जाता हैं। भाषा और समाज दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा भाषाओं का प्रयोग समाज में उनकी स्थिति से निर्धारित होता हैं। भाषा और समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिससे समाज में विभिन्न वर्गों के बीच सामंजस्य और एकता की भावना पैदा होती हैं। समाज के विभिन्न वर्ग अपनी प्रकृति, अध्ययन और संस्कृति के माध्यम से भाषा में खुद की अभिव्यक्त करते हैं, जो समाज में उनकी स्थिति के आधार पर उनकी भाषा और संस्कृति का निर्धारण करती हैं। भाषा और समाज दोनों महत्वपूर्ण संस्थाएं हैं और दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। भाषा का उपयोग समाज के विभिन्न वर्गों से जुड़ने में मदद करता हैं और समाज में भेदभाव को दूर करने में मदद करता हैं। भाषा और समाज दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, जो भाषा के संरक्षण और प्रचार को महत्वपूर्ण बनाता हैं और साथ ही सामुदायिक एकता की भावना पैदा करने में सहायता करता हैं।

भाषा व्यक्ति के संस्कारों की संवाहक हैं। भाषा के बिना, किसी भी देश की संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती हैं। भाषा हमें राष्ट्रीयता और एकात्मता से जोड़ती हैं और देश प्रेम की भावना उत्प्रेरित करती हैं। एक बड़ी ही मशहूर कहावत हैं, 'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी'। भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं हैं बल्कि भाषा से इन्सान की प्रवृत्ति और प्रकृति भी उजागर होती हैं। भारत में वैसे तो लगभग 121 भाषाएं बोली जाती हैं इसलिए भारत देश को बहुभाषिक राष्ट्र भी कहा जाता हैं। इतनी भाषाएं बोली जानेवाला भारत इकलौता राष्ट्र हैं। भारतीय भाषाओं की विशेषता यह भी रही हैं कि भारत में बोली जानेवाली भाषाओं को वैज्ञानिक आधार हैं। सभी भारतीय भाषाएं जिस प्रकार बोली जाती हैं उसी प्रकार लिखी जाती हैं। विदेशी भाषाओं जैसे इसमें साइलेंट अक्षर नहीं होते हैं। भारतीय भाषाओं की लिपियां भी भिन्न-भिन्न हैं और उनकी अलग विशेषताएं भी हैं।

भारत देश पर कई परकीय आक्रांता द्वारा हमले किए गए। उनके द्वारा भारत की संस्कृतिक विरासतों के प्रतिक एवं भाषाओं को भी नुकसान पहुँचाया गया। जब मुघलों का शासन था तब प्रशासनिक भाषा के तौर पर फ़ारसी भाषा का प्रचलन था। मुघलों के साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत में अंग्रेजों का प्रशासन रहा। अंग्रेजों ने अंग्रेजी भाषा को प्रशासनिक भाषा के तौर पर लागू किया। भारतीयों ने अंग्रेजी भाषा को स्वीकार किया और काफ़ी लंबे समय तक यह भाषा हिंदुस्थान में प्रचलित रही। प्रशासनिक कामकाज एवं शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी ही था। अंग्रेज प्रशासन के समाप्ति पर 15 अगस्त, 1947 को जब भारत देश आज़ादी हुआ उसके बाद भी दो साल तक अंग्रेजी भाषा का ही प्रचलन भारत में बना रहा। किंतु जब अंग्रेजी भाषा को हटाने की मांग ज़ोर पकड़ने लगी तो 12 सितंबर, 1949 को संविधान सभी का आयोजन किया गया और इसमें प्रत्येक राज्य के भाषायी प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया गया। यह बहस दो दिनों तक चली जिसमें आख़िरकार 14 सितंबर, 1949 को भारत की अधिकारिक भाषा के तौर पर हिंदी भाषा का चुनाव किया गया। भारत में 22 भारतीय भाषाओं को भी राजभाषा का दर्जा दिया गया हैं जिसमें राज्य सरकारें प्रशासनिक काम-काम करती हैं।

भाषा समाज को सुसंस्कृत एवं आगे बढ़ाने का काम करती हैं। समाज का विकास भाषा के विकास के साथ जुड़ा रहता हैं। भाषा जितनी समृद्ध होगी समाज भी उतना की प्रगत होगा। इसलिए भाषाओं का संवर्धन करना और लगातार उनका प्रयोग करते रहना आवश्यक होता हैं। अन्यथा भाषाएं मृतप्राय होती हैं और जब भाषाएं समाप्त होती हैं तो उस देश के विकास की गति भी धीमी और प्रभावित हो जाती हैं। यहाँ पर लॉर्ड मैकाले का उदाहरण दिया जा सकता हैं। मैकाले का मानना था कि उस वक़्त की शिक्षा और संस्कृति से भारतीय मानसिक रूप से कभी गुलामी को स्वीकार नहीं करेंगे, अगर उनको गुलाम बनाना हैं, तो उनकी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त करना होगा। इसी तथ्य को मध्य नजर रखते हुए, व्यावसायिक शिक्षा के नाम पर मैकाले ने आधुनिक शिक्षा व्यवस्था शुरू की जिसका माध्यम पूरी तरह से अंग्रेज़ी था मैकाले ने उस वक्त की शिक्षा पद्धति को खत्म करने के लिए बिना किसी सरकारी नोटिस के जिम्मा ले लिया था और उसने भारतीय युवाओं को इस प्रकार से जाल में फसाया की अगर आप वर्तमान

शिक्षा पद्धति लेते हैं बजाय गुरुकुल शिक्षा पद्धति के तो आपको तत्काल सरकारी नौकरी दे दी जाएगी। इस सरकारी नौकरी के लालच में लोग गुरुकुल की बजाय मैकाले के स्कूलों में जाने लगे। जिससे गुरुकुल का अस्तित्व खत्म हो गया। गुरुकुल के खत्म हो जाने से वहाँ जिस भाषा में विषयों को पढ़ाया जाता था वह भाषाओं का प्रचलन भी बंद हो गया और बच्चे व्यावसायिक शिक्षा लेने लगे जो अंग्रेज़ी भाषा में था। इससे स्थानीय भाषाएं बोलचाल से कम होती चली गई और उसका स्थान अंग्रेज़ी भाषा ने लिया।

भाषाविद का यह भी कथन विचार योग्य है कि जब किसी देश, प्रांत या समुह की भाषा प्रचलन से बंद होती है तो वह केवल इससे उस भाषा का नुकसान नहीं होता अपितु उस देश की संस्कृति की भी हानि होती है। वैसे किसी भी भाषा को सीखना और उसका प्रयोग करने में कोई बुराई नहीं है बल्कि सभी भाषाओं की अपनी एक अलग विशेषताएं है और अलग ढंग है। इस कारण सभी भाषाओं को अपनाना उनको सीखना आवश्यक है। किंतु इस बात का भी हमें ध्यान रखना चाहिए कि इससे अपनी मूल भाषा को कोई क्षति न पहुँचे।

भाषा के पतन को यदि रोकना है तो हमें अधिक से अधिक उस भाषा का प्रयोग करना आवश्यक जिससे समाज में भाषा का प्रचलन बना रहे और आनेवाली पीढ़ियां भी उस भाषा को सीखे। भाषा को समाज का दर्पण इसीलिए कहा गया है। जिसप्रकार दर्पण में हम अपना प्रतिबिंब देखते हैं भाषा से भी हमारे संस्कृति की महान विरासत उजागर होती है।

मृणाल संतोष पाटोळे,
पुत्री संतोष पाटोळे.

आरजू

आरजू दिल की नहीं रही अब, कि तुझे मैं अपना बनाऊ,
काँटों की सेज पे लेट कर, तुझे पाने का सपना सजाऊ ।

समझा दिया है दिल को, कि हर ख्वाब हकीकत नहीं होती,
हर सच्चे प्यार की, मुकम्मल मंजिल नहीं होती ।

मालूम है मुझे, इस बार, जीना तो पड़ेगा तेरे बगैर ही,
कमबख्त मौत भी रूठी है इस कदर,
आती तो है मगर छू कर है चली जाती ।

श्री. रोहित कुमार राज,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

मित्रता

एक दिन जिंदगी ऐसे मुकाम पर पहुँच जाएँगी।
दोस्ती तो सिर्फ़ यादों में ही रह जाएँगी।
हर बात दोस्तों की याद दिलायेंगी।

और हँसते हँसते फिर आँख नम हो जाएँगी।
ऑफिस के रूम में क्लासरूम नज़र आएँगी।

पैसे तो बहोत होंगें।
लेकिन खर्चा करने के लम्हें कम हो जायेंगें।
जी लेंगे खुल के इस पल को मेरे दोस्त।
क्यूँ के जिंदगी इस पल को फिर से नहीं दोहराएँगी।

श्री. आयूब खान,
आकाशवाणी.

भारतीय तटरक्षक बल की जांबाजी

26 दिसम्बर 24 की एक काली रात, जब अरब सागर में एक जहाज 'MSV तेज डारे हरम' डूबने के कगार पर था। जहाज पर सवार नौ भारतीय चालक दल के सदस्य मौत के मुंह में थे। लेकिन भारतीय तटरक्षक बल ने अपनी बहादुरी और सूझ-बूझ का प्रदर्शन करते हुए, उन नौ जिंदगियों की मौत के मुंह से निकाल लिया । गुजरात के मुंद्रा से यमन के सोकोत्रा की ओर जा रहा यह जहाज अरब सागर की तूफानी लहरों में बुरी तरह फंस गया था। चालक दल को लगा की यह उनकी अंतिम यात्रा है। लेकिन उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी और अपनी जान बचाने के लिए एक आखिरी प्रयास करने की सोची उन्होंने अपने जहाज से एक संकट संकेत भेजा।

भारतीय तटरक्षक दल को जब यह संकट संकेत मिला तो, उन्होंने तुरंत कार्यवाही की। भारतीय तटरक्षक के क्षेत्रीय मुख्यालय मुंबई और गांधीनगर में तुरंत एक टीम गठित की गई जहाज और चालक दल को बचाने के लिए रणनीति बनानी शुरू की। अरब सागर में मौसम बहुत ही भयावह था और ऊँची ऊँची लहरों ने विकराल रूप ले रखा था। ऐसे मौसम में बचाव कार्य करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी । लेकिन भारतीय तटरक्षक दल के वीर जांबाज सर पर कफन बांधकर उन विकराल लहरों से लड़ने के लिए बेचैन हो रहे थे ।

उधर चालक दल के प्राण उनके गले में अटके हुए थे। उनके लिए एक एक पल, एक सदी जैसा था। हर बीतते क्षण के साथ मौत उनकी ओर कदम बढ़ा रही थी। उस अथाह समुन्द्र में उनको कोई भी आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही थी। इधर भारतीय तटरक्षक के क्षेत्रीय मुख्यालय में भी हालत तनावपूर्ण थे, क्योंकि सभी इस बात से परिचित थे कि, चालक दल की जिन्दगी और मौत के बीच कोई खड़ा है तो वह है, भारतीय तटरक्षक दल। और हर बीतता क्षण जहाज पर सवार चालक दल की मौत और जिंदगी के बीच के फासले को कम कर रहा था । और अंततः इस खतरनाक मिशन को पूरा करने की जिम्मेदारी दी गई 'भारतीय तटरक्षक जहाज शूर' को।

फिर शुरू हुआ, एक ऐसा खतरनाक मिशन जिसमें भारतीय तटरक्षक के वीरों पर जिम्मेदारी थी, उन नौ सदस्यों को सकुशल घर पहुंचाने की। उन विकराल लहरों को चीरते हुए 'भारतीय तटरक्षक जहाज शूर' अपनी मंजिल की ओर बढ़ने लगा। उस अथाह समुन्द्र में गहन खोज के बाद 'भारतीय तटरक्षक जहाज शूर' को दिखाई दिया, उन लहरों के बीच बेबस खड़ा 'MSV तेज डारे हरम' और जैसे ही भारतीय तटरक्षक के जवान 'MSV तेज डारे हरम' पर पहुंचे तो सब के सब हैरान रह गए, क्योंकि जहाज पर कोई भी सदस्य मौजूद नहीं था। जवानों ने जहाज का कौना कौना छान मारा लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला । अब सामने आती है भारतीय तटरक्षक के जवानों के लिए एक नई चुनौती । क्योंकि अब कोई भी जानकारी उनके पास नहीं थी कि, चालक दल में से कोई जिंदा भी है, या नहीं। अगर जिंदा हैं तो एक साथ हैं, या नहीं। अलग अलग हैं तो कौन किस दिशा में है, ऐसे ही अनेक सवाल भारतीय तटरक्षक के जवानों के मन में थे। परन्तु ऐसी चुनौतियों से लड़ने के लिए ही इस सैन्य बल की स्थापना की गई थी। भारतीय तटरक्षक के जवानों ने हार ना मानते हुए चालक दल के सदस्यों को खोजना शुरू किया । काफी देर तक इन लहरों से लड़ने के बाद के बाद भारतीय तटरक्षक के जवानों को दूर उन विकराल लहरों में फंसी एक लाइफ राफ्ट दिखाई दी। पास जाने पर उसमें सभी चालक दल के सदस्य दिखे। उन सबकी हालत बहुत ही ख़राब थी। उन लोगों ने जहाज को छोड़कर एक लाइफ राफ्ट पर शरण ले रखी थी। उनके लिए उस समय भारतीय तटरक्षक के जवान किसी फ़रिश्ते से कम नहीं थे। भारतीय तटरक्षक बल के जवानों ने अपनी जान जोखिम में डालकर, उन विकराल लहरों से लड़ते हुए सभी चालक दल के सदस्यों को 'भारतीय तटरक्षक जहाज शूर' पर पहुँचाया और उन्हें चिकित्सा सहायता प्रदान की गई । इस तरह भारतीय तटरक्षक बल ने अपनी हिम्मत और सूझ-बूझ से नौ जिन्दगियों को उस बेरहम समुन्द्र में डूबने से बचाया तथा एक और मिशन को सफलतापूर्वक पूरा किया ।

श्री. अजय शर्मा,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

महिला सक्षमीकरण

भारतीय लोकशाहीच्या इतिहासात 2023 हे वर्ष सुवर्णाक्षरांनी लिहिले जाईल 'नारी शक्ती वंदन अधिनियम' मंजूर झाल्यानंतर लोकसभा आणि राज्य विधानसभांमध्ये महिलांना 33% आरक्षण देण्याचा मार्ग मोकळा झाला. स्वातंत्र्यानंतर तब्बल 75 वर्षांनी महिलांना राजकीय प्रतिनिधित्वाची ही ऐतिहासिक संधी मिळाली आहे. हे आरक्षण केवळ जागांचे वाटप नसून भारतीय स्त्रीच्या नेतृत्वगुणांना मिळालेली घटनात्मक मान्यता आहे.

भारतीय समाजात स्त्रीने प्रत्येक क्षेत्रात आपली क्षमता सिद्ध केली आहे. शिक्षण, विज्ञान, संरक्षण, उद्योग, क्रीडा आणि प्रशासन या सर्व क्षेत्रांत महिलांनी उल्लेखनीय कामगिरी केली आहे. तरीही राजकारणात त्यांचे प्रतिनिधित्व अत्यल्प राहिले. आज संसदेत महिलांचे प्रमाण साधारण 14 ते 15 टक्क्याच्या दरम्यान आहे. स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये आरक्षण मिळाल्यानंतर अनेक महिलांनी प्रभावी नेतृत्व सिद्ध केले, परंतु राष्ट्रीय आणि राज्यस्तरीय राजकारणात त्यांना पुरेशा संधी मिळाल्या नाहीत. 33% आरक्षणामुळे ही विषमता कमी होण्यास मदत होईल.

पंचायतराज व्यवस्थेमधील महिलांच्या सहभागाचा अनुभव अत्यंत सकारात्मक राहिला आहे. अनेक राज्यांमध्ये महिलांना 50% आरक्षण देण्यात आले आणि त्यातून ग्रामीण विकासाच्या कामांना नवी दिशा मिळाली. महिलांनी पाणीपुरवठा, स्वच्छता, शिक्षण, आरोग्य, पोषण आणि महिला सुरक्षा यांसारख्या मूलभूत प्रश्नांवर अधिक संवेदनशीलतेने काम केले. अनेक गावांमध्ये महिला सरपंचांनी भ्रष्टाचाराला आळा घातला आणि पारदर्शक प्रशासनाची नवी पद्धत निर्माण केली. त्यामुळे महिलांचे नेतृत्व केवळ प्रतीकात्मक नसून परिणामकारक असल्याचे सिद्ध झाले आहे.

33% आरक्षणामुळे भारतीय राजकारणातील पुरुषप्रधान मानसिकतेलाही मोठे आव्हान मिळणार आहे. अनेकदा महिलांना केवळ प्रचारापुरते स्थान दिले जाते, निर्णयप्रक्रियेत मात्र त्यांचा सहभाग कमी असतो. आता महिलांना धोरणनिर्मिती, कायदे प्रक्रिया आणि राष्ट्रीय प्रश्नांवर थेट भूमिका मांडण्याची संधी मिळेल. संसदेत महिलांचे प्रमाण वाढल्यास महिलांविषयीचे कायदे अधिक संवेदनशील आणि वास्तववादी होतील. बालविवाह, महिलांवरील अत्याचार, मातृत्व सुविधा, समान वेतन, आरोग्य आणि शिक्षण या विषयांना अधिक प्राधान्य मिळू शकते.

मात्र, केवळ कायदा मंजूर करून महिलांचे खरे सक्षमीकरण होणार नाही. राजकीय पक्षांनी महिलांना निवडणुकीत उमेदवारी देण्याची सकारात्मक मानसिकता निर्माण करावी लागेल. अनेकदा महिलांना निवडणुकीत दुय्यम किंवा 'जिंकण्याची शक्यता कमी' असलेल्या मतदारसंघांमध्ये उमेदवारी दिली जाते. ही प्रवृती बदलणे आवश्यक आहे. महिलांना पक्ष संघटनांमध्ये महत्त्वाची पदे देणे, त्यांना राजकीय प्रशिक्षण देणे आणि निर्णयप्रक्रियेत सहभागी करणे ही काळाची गरज आहे.

यासोबतच समाजातील पितृसत्ताक मानसिकता बदलणेही अत्यंत महत्वाचे आहे. आजही अनेक महिलांना घर आणि कुटुंबाच्या जबाबदाऱ्यांमुळे राजकारणात सक्रिय सहभाग घेता येत नाही. ग्रामीण भागात तर महिलांना स्वतंत्र राजकीय ओळख निर्माण करणे अधिक कठीण जाते. त्यामुळे शिक्षण, आर्थिक स्वावलंबन आणि सामाजिक जागृती यांना प्राधान्य देणे आवश्यक आहे. शिक्षित आणि आत्मनिर्भर महिला अधिक प्रभावी नेतृत्व करू शकतात.

महिला आरक्षणामुळे भारताच्या लोकशाहीला अधिक व्यापक आणि समावेशक स्वरूप मिळेल. लोकशाही तेव्हाच मजबूत होते जेव्हा समाजातील प्रत्येक घटकाला प्रतिनिधित्व मिळते. महिलांचा आवाज संसदेत अधिक प्रभावीपणे पोहोचल्यास धोरणनिर्मिती अधिक संतुलित होईल. देशाच्या विकासामध्ये महिलांची भूमिका केवळ मतदार म्हणून नव्हे तर निर्णयकर्त्या म्हणूनही महत्त्वाची ठरेल.

33% आरक्षण हा शेवट नसून नव्या परिवर्तनाची सुरुवात आहे. जेव्हा संसदेत आई, शिक्षिका, शेतकरी, वैज्ञानिक, उद्योजिका आणि समाजसेविका म्हणून विविध अनुभव असलेल्या महिला कायदे करतील, तेव्हा भारतीय लोकशाही अधिक समृद्ध

होईल. 'सबका साथ, सबका विकास' हे स्वप्न साकार करण्यासाठी स्त्रीशक्तीचा सक्रिय सहभाग अत्यावश्यक आहे. नव्या भारताच्या जडणघडणीत महिलांचे नेतृत्व निर्णायक ठरणार असून हे आरक्षण त्या दिशेने टाकलेले एक ऐतिहासिक पाऊल आहे.

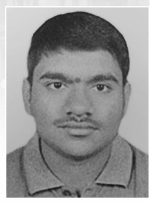

श्री. संग्राम अरुण पाटील,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

निसर्ग

क्षणात वारा, सुखी किनारा
क्षणात बरसे काळे घन
क्षणभराचा खेळ हा सारा
क्षणात हसते, रूसते मन
कधी भाळते इंद्रधनुवर
बनते कधी वेडे चकोर
शिशिरातील पानगळ होते,
बहरते कधी होऊनी मोहोर
क्षितिजाला गवसणी घालू पाहते,
सागर कवेत घेण्या आतूर
शब्दांत गुंतत जाते अलगद
कधी छेडते अनोळखी सूर
नव्या वाटा, नव्या दिशा शोधते
वाहते नदी होऊन अवखळ
चंचल मन हे भासे मजला
भावनांचे फसवे मृगजळ.

भास्कर

सुर्यास्तानंतरच्या चांदण्यामध्ये
लपलेला उदयाचा भास्कर
भवितव्यातील गाण्याचा
न उमगलेला स्वर
अपरिचित, अद्भुत, अव्यक्त
अन अनोळखी
हिरव्या झाडाला फुटलेली
जणू पालवी नवखी
शिशिरातील पानगळ
आणि उडणारे आठवणींचे पक्षी
कोऱ्या आयुष्याच्या पानावरील
अपुरी, अमर्त्य नक्षी
भूतकाळातील क्षणांची पूंजी
आणि मनात दडलेला हर्ष
सुखदुःखाची वेगळीच गुंफण
घेऊन आलेले अनमोल नववर्ष.

मेघ

विरे अथांग निळाई निळे झाकोळले नभ
फिरे कालचक्र असे नव्या ऋतुचा आरंभ
तप्त आसुसली माय हिरवी शाल पांघराया
आभाळाचे ओले अश्रु तिच्या कुशीत झेलाया
पक्षी बिगीने वेचती काट्या बांधाया घरटे
नजरेत चातकाच्या आज व्याकुळता दाटे
आली धुंदवेडी सर स्पर्श कराया मातीला
सौदामिनीचा प्रकाश, मेघगर्जना साथीला
आली चिंब ओली वर्षा न्हावु धरेला घालण्या
आतुरला आसमंत, उभा सरीत भिजण्या....

सुश्री. प्रणाली प्रमोद गमरे,
केनरा बैंक.

रत्नागिरी की जलवायु : एक भौगोलिक और वैज्ञानिक विश्लेषण

रत्नागिरी (महाराष्ट्र) की जलवायु पर यह विस्तृत लेख भूगोल, ऋतुओं, कृषि और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर प्रकाश डालता है:

❊ प्रस्तावना : महाराष्ट्र के कोंकण तट पर स्थित रत्नागिरी जिला अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक महत्व और विश्व प्रसिद्ध हापुस आम के लिए जाना जाता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार, रत्नागिरी की जलवायु 'उष्णकटिबंधीय मानसूनी' (Tropical Monsoon Climate) श्रेणी में आती है। यहाँ की जलवायु को निर्धारित करने में अरब सागर और सह्याद्रि पर्वतमाला की महत्वपूर्ण भूमिका है।

1. रत्नागिरी की जलवायु के मुख्य कारक

रत्नागिरी की जलवायु मुख्य रूप से दो भौगोलिक विशेषताओं से प्रभावित होती है:

● समुद्र की निकटता : अरब सागर के पास होने के कारण यहाँ पूरे वर्ष आर्द्रता (Humidity) अधिक रहती है और तापमान में बहुत अधिक उतार-चढ़ाव नहीं होता।

● सह्याद्रि पर्वत शृंखला : जिले के पूर्व में स्थित ये पहाड़ियाँ मानसून की हवाओं को रोककर भारी वर्षा कराने में सहायक होती हैं।

2. ऋतुओं का चक्र

रत्नागिरी में ऋतुओं को तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता है:

क. वर्षा ऋतु (जून से सितंबर)

यह रत्नागिरी की सबसे प्रभावी ऋतु है। खचऊ के आंकड़ों के अनुसार, यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 2500 मिमी से 3500 मिमी के बीच होती है।

● विशेषता: भारी बारिश, घने बादल और तेज हवाएं। इस दौरान वातावरण पूरी तरह हरा-भरा हो जाता है।

● महत्व: यह समय धान (चावल) की खेती के लिए सबसे उपयुक्त होता है, जो कोंकण की मुख्य फसल है।

ख. शीत ऋतु (अक्टूबर से फरवरी)

यह समय रत्नागिरी घूमने के लिए सबसे सुखद माना जाता है।

● तापमान: न्यूनतम तापमान आमतौर पर 18°C से 20°C के बीच रहता है।

● अनुभव: सर्दियों में भी यहाँ कड़ाके की ठंड नहीं पड़ती। हवा में नमी कम हो जाती है और आसमान साफ रहता है, जो इसे पर्यटन के लिए आदर्श समय बनाता है।

ग. ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मई)

गर्मियों में यहाँ की गर्मी 'उमस भरी' (Oppressive) होती है।

● तापमान: अधिकतम तापमान 32°C से 38°C तक जा सकता है।

● विशेषता: अधिक आर्द्रता के कारण वास्तविक तापमान से अधिक गर्मी महसूस होती है (RealFeel)। मई का महीना सबसे गर्म होता है।

3. तापमान और वर्षा के आंकड़े (औसत)

महीना	औसत अधिकतम तापमान (°C)	औसत न्यूनतम तापमान (°C)	वर्षा की स्थिति
जनवरी	31-32	18-19	शुष्क
मई	33-35	26-27	उमस भरी गर्मी
जुलाई	28-29	24-25	अत्यधिक वर्षा
अक्टूबर	32-33	23-24	मानसून की विदाई

4. कृषि और जलवायु का अटूट संबंध
रत्नागिरी की अर्थव्यवस्था और जीवनशैली यहाँ की जलवायु पर टिकी है।

- हापुस आम (Alphonso): रत्नागिरी का आम दुनिया भर में मशहूर है। इसे पकने के लिए मार्च-मई की गर्मी और हल्की उमस की आवश्यकता होती है।
- काजू और नारियल: तटीय जलवायु इन दोनों फसलों के लिए बहुत अनुकूल है।
- चुनौतियां: हाल के वर्षों में 'अवकाळी' (बेमौसम) बारिश ने आम की फसल को भारी नुकसान पहुँचाया है।

5. जलवायु परिवर्तन का प्रभाव
महाराष्ट्र राज्य जलवायु कार्य योजना के अनुसार, रत्नागिरी में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट संकेत दिख रहे हैं:
1. तापमान में वृद्धि: पिछले कुछ दशकों में न्यूनतम तापमान में वृद्धि देखी गई है।
2. अनिश्चित मानसून: अब बारिश के दिनों की संख्या कम हो रही है, लेकिन कम समय में बहुत अधिक बारिश (Cloudburst जैसी स्थिति) होने की घटनाएं बढ़ रही हैं।
3. समुद्र का बढ़ता स्तर: तटीय क्षरण (Coastal Erosion) एक बड़ी समस्या बन रही है, जिससे समुद्र तट के किनारे रहने वाली आबादी पर खतरा मंडरा रहा है।

✲ **निष्कर्ष :** रत्नागिरी की जलवायु न केवल इसकी प्राकृतिक संपदा को संजोती है, बल्कि यहाँ की संस्कृति और खान-पान को भी परिभाषित करती है। हालाँकि, बदलते वैश्विक परिवेश में इस संवेदनशील तटीय पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) को बचाने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

श्री. अनिल कुमार सिंह,
पवन गुब्बारा वेधशाला.

आक्रोश

सुनो....
तुम कोई परिमाण नहीं हो
जिस पर में अपने आप को तोलती रहूं

तुम कोई परिमाण नहीं हो
जिस पर में अपने आप को तोलती रहूं

ना ही कोई इकाई हो
जिस से मैं नापती रहू अपनी सीमाएं

तुम वो सर्टिफिकट नहीं हो सकते
जिस से जांची जाए मेरी योग्यताएं
मेरा व्यक्तित्व किसी का दास नहीं है

मेरे अस्तित्व को तुम्हारे सिग्नेचर की क्या जरूरत..
तुम मेरी नियति नहीं हो.. मेरी औकात जो भी है
मेरी है, मेरी अपनी..

मेरी औकात जो भी है मेरी है, मेरी अपनी..
तुम्हारे एहसान मेरी पहचान नहीं हो सकते

तुम अंतिम नहीं हो
तुम अंतिम नहीं हो तुम समाज हो
तुम अंतिम नहीं हो तुम समाज हो

अपनी मर्यादा में रहो तुम समाज हो
अपनी मर्यादा में रहो

श्रीमती अमृता नरसाले,
पत्नी विजय नरसाले,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम

पेड़ लगाने का लो संकल्प,
प्रकृति बचाने का यही है विकल्प।

चलो वृक्ष लगाएं मिलकर यार...
प्रदूषण पर करें कड़ा प्रहार।

विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी, 2026
सदस्य कार्यालयों में आयोजित प्रतियोगिताएं तथा संगोष्ठी

नेशनल एश्योरेंस - प्रशासनिक शब्दावली

भारतीय स्टेट बैंक - 1 हिंदी शब्दावली, 2 हिंदी निबंध प्रतियोगिता

भारतीय तटरक्षक अवस्थान - वाद विवाद

डाक अधिक्षक कार्यालय - हिंदी मुहावरे

भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान - हिंदी मुहावरे

विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी, 2026
सदस्य कार्यालयों में आयोजित प्रतियोगिताएं तथा संगोष्ठी

न्यू इंडिया एश्योरेंस - काव्य पठन

कोंकण रेलवे - संगोष्ठी - आंतरिक कामकाज में राजभाषा

दीप स्तंभ एवं डीजीपीएस - काव्य पाठ

पवन गुब्बारा वेधशाला - काव्य पठन

बैंक ऑफ इंडिया - संगोष्ठी - राजभाषा कार्यान्वयन में विभाग प्रमुखों की भूमिका

पिछली बैठक की झलकियां...

INDIAN CO
MINISTRY
भारतीय तटरक्षक
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी
हिंदी
कवि सम्मेलन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी
(भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा गठित)
विश्व हिंदी दिवस, 2026 के उपलक्ष्य में
तृतीय
हिंदी
कवि सम्मेलन

नगर राजभाषा खेलकूद
क्रिकेट प्रतियोगिता

संसदीय राजभाषा समिति

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा समिति के कार्य की सराहना की.

वैश्विक ऊर्जा संकट

वैश्विक ऊर्जा संकट 21वीं सदी की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है, जो वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था, समाज और पर्यावरण को प्रभावित कर रही है। ऊर्जा किसी भी देश की अर्थव्यवस्था, औद्योगिक विकास और दैनिक जीवन की आधारशिला होती है, और इसके बिना आधुनिक सभ्यता की कल्पना संभव नहीं है। किंतु वर्ष 2025-2026 के दौरान विश्व ने जिस प्रकार की ऊर्जा अस्थिरता का सामना किया है, वह पिछले कई दशकों में अभूतपूर्व मानी जा रही है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसियों और आर्थिक संगठनों के अनुसार, यह संकट केवल संसाधनों की कमी का परिणाम नहीं है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति, आर्थिक असंतुलन, जलवायु परिवर्तन और तकनीकी चुनौतियों का संयुक्त परिणाम है। हाल की घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वर्तमान ऊर्जा व्यवस्था अत्यधिक नाजुक और अस्थिर है।

हाल के समाचारों के अनुसार, मध्य-पूर्व में बढ़ते संघर्ष और विशेष रूप से ईरान से जुड़ा युद्ध इस संकट का सबसे बड़ा कारण बनकर उभरा है। इस युद्ध के कारण Hormuz जलडमरूमध्य, जिससे विश्व का लगभग 20% तेल गुजरता है, बार-बार बाधित हुआ है, जिससे वैश्विक आपूर्ति पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। परिणामस्वरूप तेल की कीमतें तेजी से बढ़ीं और मई 2026 में यह 114 प्रति बैरल से ऊपर पहुंच गई, जो लगभग चार वर्षों का उच्चतम स्तर है। कुछ अनुमानों के अनुसार, यह कीमत 125 प्रति बैरल तक पहुंच सकती है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, ऊर्जा आपूर्ति में वास्तविक कमी के संकेत भी मिलने लगे हैं। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि वैश्विक तेल भंडार तेजी से घट रहे हैं और यह स्थिति 1970 के दशक के तेल संकट जैसी हो सकती है। यही नहीं, युद्ध और हमलों के कारण तेल रिफाइनरियों और ऊर्जा बुनियादी ढांचे को भी नुकसान पहुंचा है, जिससे उत्पादन और आपूर्ति दोनों प्रभावित हुए हैं।

ऊर्जा संकट का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है मांग और आपूर्ति के बीच बढ़ता असंतुलन। विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है और औद्योगीकरण तेजी से हो रहा है, जिससे ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। लेकिन ऊर्जा उत्पादन और निवेश उस गति से नहीं बढ़ पा रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि वर्तमान निवेश वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है, जिससे यह संकट और गहरा सकता है। इसके साथ ही, कुछ बड़े तेल उत्पादक देशों के बीच मतभेद और संगठनात्मक बदलाव, जैसे संयुक्त अरब अमीरात का OPEC से बाहर होना, ने भी बाजार को अस्थिर किया है।

ऊर्जा संकट के प्रभाव व्यापक और बहुआयामी हैं। सबसे पहले, इसका सीधा असर ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि के रूप में देखा जा रहा है। विश्व बैंक के अनुसार, 2026 में ऊर्जा कीमतों में लगभग 24% तक वृद्धि हो सकती है, जो विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से चिंता का विषय है। जब ऊर्जा महंगी होती है, तो परिवहन, उद्योग और कृषि की लागत बढ़ जाती है, जिससे महंगाई बढ़ती है। इसके परिणामस्वरूप आम जनता के जीवन स्तर पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक खाद्य सुरक्षा को भी प्रभावित कर रहा है। ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि के कारण उर्वरकों की कीमतों में 30-40% तक वृद्धि हो सकती है, जिससे खाद्य उत्पादन महंगा हो जाता है और खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ जाती हैं। इसके अलावा, हवाई यात्रा और परिवहन भी महंगे हो गए हैं, जिससे वैश्विक व्यापार और पर्यटन उद्योग प्रभावित हो रहा है। उर्जा की अत्यधिक कमी का सबसे अधिक प्रभाव गरीब और विकासशील देशों पर पड़ता है, जो ऊर्जा आयात पर निर्भर हैं। एशिया जैसे क्षेत्र, जो मध्य-पूर्व के तेल पर निर्भर हैं, सबसे पहले इस संकट का सामना कर रहे हैं। कई देशों को ऊर्जा बचत के उपाय अपनाने पड़ रहे हैं, जैसे ईंधन खपत कम करना, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना और ऊर्जा उपयोग में कटौती करना।

पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह संकट चिंताजनक है। ऊर्जा की कमी को पूरा करने के लिए कई देश कोयले जैसे प्रदूषणकारी स्रोतों

का अधिक उपयोग कर रहे हैं, जिससे कार्बन उत्सर्जन बढ़ रहा है और जलवायु परिवर्तन की समस्या और गंभीर हो रही है। इस प्रकार, ऊर्जा संकट और पर्यावरणीय संकट एक-दूसरे को और अधिक जटिल बना रहे हैं। इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाना आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण उपाय है नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विस्तार। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल विद्युत जैसे स्रोत न केवल टिकाऊ हैं, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा भी सुनिश्चित करते हैं। इसके साथ ही, ऊर्जा दक्षता बढ़ाने और अनावश्यक खपत को कम करने की आवश्यकता है। सरकारों को ऊर्जा क्षेत्र में निवेश बढ़ाना चाहिए और नई तकनीकों जैसे ऊर्जा भंडारण, स्मार्ट ग्रिड और वैकल्पिक ईंधनों के विकास पर ध्यान देना चाहिए। हाल की घटनाओं ने यह भी स्पष्ट किया है कि केवल जीवाश्म ईंधनों पर निर्भर रहना जोखिम भरा है, इसलिए ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जैसे कि कई देशों द्वारा सामूहिक रूप से रणनीतिक तेल भंडार जारी करना।

अंततः, ऊर्जा संकट केवल संसाधनों की कमी का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह मानवता की दूरदर्शिता और जिम्मेदारी की परीक्षा भी है। यदि हम पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर अत्यधिक निर्भरता जारी रखते हैं, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न होंगी। इसलिए समय की मांग है कि हम नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाएं, ऊर्जा संरक्षण को अपनी आदत बनाएं और सतत विकास की दिशा में ठोस कदम उठाएं। सामूहिक प्रयास, वैज्ञानिक प्रगति और जागरूक नागरिकता के माध्यम से ही हम इस संकट पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और एक सुरक्षित, स्वच्छ तथा संतुलित ऊर्जा भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

श्री. अभिनव कुमार सिंह,
पवन गुब्बारा वेधशाला.

थोड़ा वक्त लेकर आना

माँ पिताजी कहते हैं,
अबकी बार जब आओगे,
कपड़े जूते मिठाई मत लाना,
साथ बैठ कुछ लम्हे जीने को,
थोड़ा वक्त लेकर आना ।।

बीवी कहती है,
अबकी बार जब आओगे,
नई साड़ी झुमके मत लाना,
माँ बाबूजी कि सेवा में हाथ बटाना,
बिखरा पड़ा है घर सारा,
संभालने मे हाथ बटाना,
थोड़ा वक्त लेकर आना ।।

बच्चे कहते है अबकी बार जब आओगे,
आइसक्रीम चॉकलेट मत लाना,
पापा मुझे अपने कंधे पे घुमाना,
लुकाछुपी मिलके साथ खेलना,
पापा थोड़ा वक्त लेकर आना ।।

सरहद कहती है,
अपनों के बीच जाकर,
मुझे भूल न जाना,
सरहद की हिफाजत तुमसे ही है,
गद्दारों से मुझे बचाना,
जल्दी लौट कर आना ।।
जल्दी लौट कर आना ।।

श्री. रोहित कुमार राज,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

समुद्री सुरक्षा

वर्तमान में समुद्री सुरक्षा में कई स्तर हैं जो हमारे देश की हर स्थिति से निपटने हेतु सक्षम बनाते हैं ख जल परिवहन लागत के लिहाज से किफायती होने के कारण समुद्री व्यापार को बढ़ावा मिला है, समुद्री व्यापार बढ़ने से सभी देशों ने अपनी एएन क्षेत्र को विकास के धारा में सम्मिलित किया है ख समुद्री सुरक्षा में कई स्तर हैं जो भारत की संप्रभुता को बाहरी देशों की आक्रमकता से बचाती हैं ।

स्वचालित पहचान प्रणाली (AIS) : स्वचालित पहचान प्रणाली (AIS) एक स्वचालित ट्रैकिंग प्रणाली है जो जहाजों पर ट्रांसपोनडेर का उपयोग करती है और इसका उपयोग पोत यातायात सेवाओं (VTS) द्वारा किया जाता है ख मूल रूप से एक स्थलीय संचार प्रणाली (जहाज से जहाज, जहाज से तट) के रूप में कार्यरत है ख अखड जानकारी समुद्री रडार की पूरक है, जो जल परिवहन में टकराव से बचाने हेतु प्राथमिक ततारिक बना हुआ है ख अखड प्रणाली समुद्र में सुरक्षित नौवहन में निरंतर योगदान प्रदान कर रहा है ।

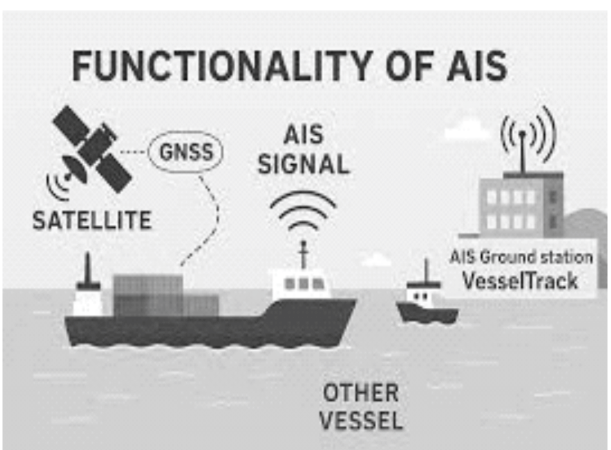

रडार (रेडियो डिटेक्शन एंड रेनजिंग) : यह समुद्री सुरक्षा में अहम स्तर है जो कि ऐसी पहचान प्रणाली है जो वस्तुवों की दूरी, दिशा और वेग निर्धारित करने के लिए रेडियो या माइक्रोवेव तरंगों का उपयोग करता है ।

कार्यान्वयन : संचरण (Transmission)
परावर्तन (Reflection)
प्रसंस्करण (Processing)

संचरण : एक ट्रैन्स्मिटर वायुमंडल में विद्युत चुंबकीय तरंगे भेजता है ।

परावर्तन : जब ये तरंगे किसी वस्तु (जैसे विमान) से टकराती हैं, तो वे परावर्तित होकर स्त्रोत की और वापस लौट आती हैं ।

प्रसंस्करण : एक रिसीवर प्रतिध्वनियों को ग्रहण करता है,और सिस्टम तरंगों को वापस लौटने में लगे समय को मापकर लक्ष्य के सटीक स्थान और गति का पता लगता है ।

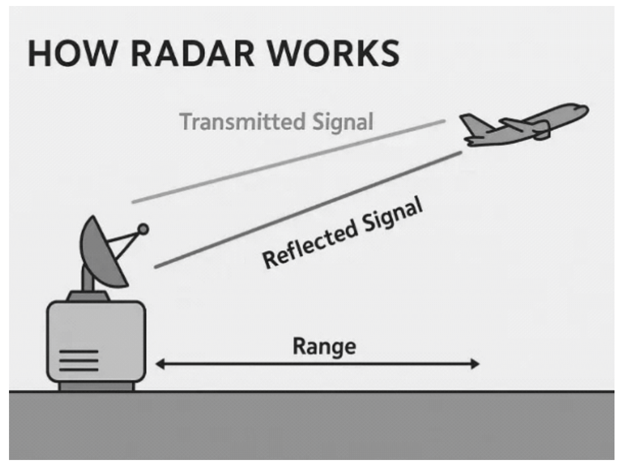

सामान्य उपयोग एवं अनुप्रयोग :

* मौसम रडार : वर्षा पर नजर रखता है, तूफ़ानों की निगरानी करता है, और स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर गंभीर मौसम संबंधी पैटर्न का पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण है ।
* विमानन एवं नौवहन : हवाई यातायात नियंत्रण में विमानों पर नजर रखने के लिए और समुद्री संचालन में जहाजों को मार्गदर्शन

देने के लिए उपयोग किया जाता है।

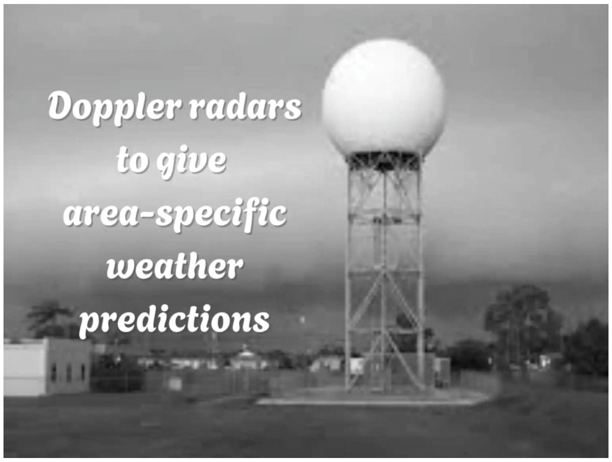

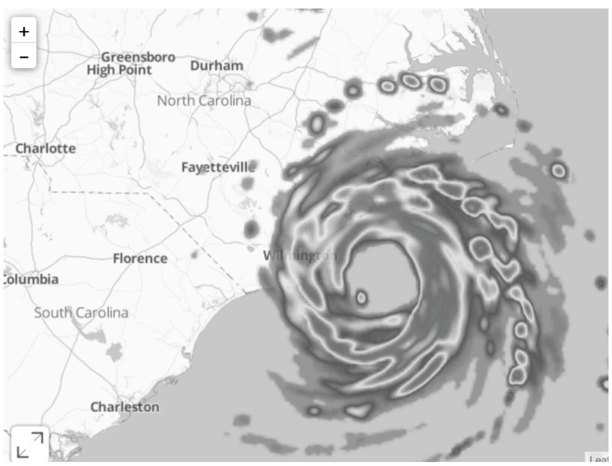

NAVTEX (Navigational Telex) :

नेविगेशनल टेलेक्स एक अंतर्राष्ट्रीय स्वचालित माध्यम आवृत्ती रेडियो सेवा है जो मौसम पूर्वानुमान, नौवहन संबंधी खतरों और कोज एवं बचाव चेतावनियो सहित महत्वपूर्ण समुद्री सुरक्षा जानकारी सीधे समुद्र में मौजूद जहाजों तक प्रसारित करता है। यह वैश्विक समुद्री संकट और सुरक्षा प्रणाली (GMDSS) के अंतर्गत संचालित, तटरेखाओं से लगभग 250 से 400 समुद्री मील की दूरी के भीतर स्थित जहाजों के लिए एक अनिवार्य सुरक्षा व्यवस्था के रूप में कार्य करता है।

वर्तमान परिदृश्य में समुद्री सुरक्षा सर्वोपरि है, जो हमारे राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा करता है। विकसित भारत 2047 अंतर्गत विकसित राष्ट्र में सम्मिलित होने के लिए अर्थव्यवस्था, सार्वभौमिक सामाजिक विकास और प्रौद्योगिकी और अन्य क्षत्रों में अग्रेसर रह कर लक्ष्य को हासिल करना है।

श्री. आकाश दीपक शेरखाने,
दीपस्तंभ.

हिम्मत की उड़ान

थक जाओ अगर, तो थोड़ा ठहर जाना,
मगर हार मानकर कभी न मुड़ जाना।
ये रास्ते आसान नहीं होते अक्सर,
पर मंज़िल भी यूँ ही नहीं मिलती हर किसी को।

जब सपनों का बोझ भारी लगने लगे,
और दुनिया भी तुम्हें कमज़ोर कहने लगे,
तब अपने अंदर की आवाज़ सुनना,
वही तुम्हें फिर से खड़ा कर देगी।

गिरना बुरा नहीं, गिरकर उठना छोड़ देना बुरा है,
कोशिशों का टूट जाना नहीं,
उम्मीदों का बुझ जाना बुरा है।

हर दिन एक नई शुरुआत है,
हर हार में एक सीख छुपी होती है,
जो समझ ले इन इशारों को,
वही आगे बढ़ता है, वही जीतता है।

याद रखो- अंधेरे का काम है घना होना,
और तुम्हारा काम है रोशनी बनना।
चलो फिर से कोशिश करते हैं, अपने डर से थोड़ा लड़ते हैं,
क्योंकि जीत उन्हीं की होती है, जो हार से कभी डरते नहीं।

श्री. राहुल लेकुरवाळे,
यूको बैंक.

ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम (जीपीएस)

ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम एक उपग्रह आधारित रेडियो नेविगेशन प्रणाली है, जिसे यू एस ए डिफेंस (USA DEFENCE) द्वारा 1980 में शुरू किया गया था, प्रारंभ में इसका उपयोग सैन्य अनुप्रयोगों के लिए किया जाता था। 1994 में इसे पूर्ण रूप से संचालन योग्य घोषित किया गया, और इसके सिग्नल नागरिक अनुप्रयोगों के लिए उपलब्ध कराए गए।

यह समुद्र, भूमि और वायु अनुप्रयोगों के लिए सटीक, निरंतर, सभी मौसमों में विश्वव्यापी नेविगेशन क्षमता प्रदान करता है। जी पी एस कॉन्सटीलेसन (GPS Constellation) में उपग्रह पृथ्वी की परिक्रमा लगभग हर 12 घंटे में करते हैं, लगभग 10,900 समुद्री मील (Nautical mile's) की दूरी पर,उपग्रह अपनी ऊँचाई और इस तथ्य के कारण कि उनके सिग्नल स्थानीय भौगोलिक बाधाओं से मुक्त होते हैं, पृथ्वी के बहुत बड़े क्षेत्र को कवर करने में सक्षम होते हैं।उपग्रहों की ऐसी कक्षा में स्थापित किया गया है कि जब कॉन्सटीलेसन (Constellation) पूर्ण हो जाती है, तो कम से कम चार उपग्रह हमेशा एक साथ पृथ्वी पर या उसके ऊपर किसी भी स्थान पर 24 घंटे प्रतिदिन जी पी एस रिसीवर (G.P.S. receiver's) को दिखाई देंगे। दृश्य उपग्रहों की संख्या महत्वपूर्ण होती है क्योंकि जी पी एस रिसीवर (G.P.S. receiver's) की स्थिति अक्षांश,रेखांश,ऊंचाई (Latitude, Longitude, Altitude) और समय की गणना करने के लिए चार उपग्रहों की आवश्यकता होती है। पूर्ण जी पी एस कॉन्सटीलेसन (GPS Constellation) में 29 ऑपरेशनल उपग्रह (Operational Satellite) और 3 अतिरिक्त उपगृह (Spare Satellite) होंगे।

कुल जी पी एस विन्यास (G.P.S. Configuration) तीन अलग-अलग भागों (segments) से मिलकर बना है।

* अंतरिक्ष खंड (Space segment) - पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले उपग्रह
* नियंत्रण खंड (Control segment) - पृथ्वी की भूमध्य रेखा (equator) पर स्थित स्टेशन जो उपग्रहों को नियंत्रित करते हैं
* उपयोगकर्ता खंड (User segment) - कोई भी व्यक्ति जो G.P.S. signal प्राप्त करता है और उसका उपयोग करता है।

*** अंतरिक्ष खंड (THE SPACE SEGMENT) :** अंतरिक्ष खंड (Space segment) को इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है कि इसमें 24 Satellites हों, जो लगभग 20200 km की ऊँचाई पर हर 12 घंटे में पृथ्वी की परिक्रमा करें और पृथ्वी की सतह के किसी भी बिंदु पर 15 कॅट ऑफ ऐंगल (15° cut-off angle) से ऊपर कम से कम 4 उपग्रह (Satellites) दिखाई दें। उपग्रह संचार (Satellite Communication) और नेविगेशन प्रणालियों में, 'स्पेस सेगमेंट' उस बुनियादी ढाँचे (Infrastructure) को कहते हैं जो सीधे अंतरिक्ष (कक्षा) में मौजूद रहकर काम करता है। स्पेस सेगमेंट के मुख्य घटक (Key Components) : उपग्रह (Satellites) : विभिन्न कक्षाओं में परिक्रमा कर रहे वे कृत्रिम उपग्रह जो डेटा, सिग्नल या रेडियो प्रसारण भेजते और प्राप्त करते हैं। पेलोड (Payloads): उपग्रह पर लगे ट्रांसपोंडर (Transponders) और एंटीना, जो सिग्नलों को प्रोसेस करके वापस भेजते हैं। अंतरिक्ष लिंक (Space Links): अपलिंक और डाउनलिंक के माध्यम से ग्राउंड स्टेशनों और उपग्रहों के बीच का कनेक्शन स्थापित करते हैं।

प्रत्येक G.P.S. Satellite में कई अत्यंत सटीक परमाणु घड़ियाँ (atomic clocks) लगी होती हैं। ये घड़ियाँ (clocks) 10.23 चकू की मूल आवृत्ति पर कार्य करती हैं। इसका उपयोग उन सिग्नल (signals) को उत्पन्न करने के लिए किया जाता है जो उपग्रह (Satellite) से भेजे (broadcast) जाते हैं। जी पी एस उपगृहों (GPS satellite's) को NAVSTAR कहा जाता है, अर्थात नेविगेशन सिस्टम विद टाइम एंड रेन्जिंग (Navigation System with Time and Ranging) ये कंट्रोल (Control) और यूजर (User segment) दोनों को सिग्नल ट्रांसमिट (Signals transmit) करते हैं।

*** नियंत्रण खंड (THE CONTROL SEGMENT) :** जी पी एस नियंत्रण खंड में जमीनी सुविधाओं का एक वैश्विक नेटवर्क शामिल है जो जीपीएस उपग्रहों को ट्रैक करता है, उनके प्रसारण की निगरानी करता है, विश्लेषण करता है और अंतरिक्ष खंड (Space segment) को आदेश और डेटा भेजता है। नियंत्रण खंड (Control segment) में 1 मास्टर कंट्रोल स्टेशन (Master control station) 5 मॉनिटर (Monitor Station's) और 4 ग्राउन्ड एंटीना

(Ground antennas) होते हैं, जो लगभग पृथ्वी की भूमध्य रेखा (Equator) पर 5 स्थानों में वितरित होते हैं।

✻ उपयोगकर्ता खंड (USERSEGMENT) : उपयोगकर्ता खंड (User Segment) का मतलब उन सभी उपकरणों और लोगों से है जो जी पी एस सिग्नल प्राप्त करते हैं। सरल शब्दों में, आपके पास मौजूद स्मार्टफोन, कार का नेविगेशन सिस्टम या जीपीएस वॉच इसी सेगमेंट का हिस्सा हैं, जो उपग्रहों से सिग्नल लेकर आपकी सटीक लोकेशन और समय बताते हैं। उपयोगकर्ता खंड (User Segment) के मुख्य कार्य और विशेषताएँ:सिग्नल प्राप्त करना: इसमें लगे एंटीना अंतरिक्ष में मौजूद उपग्रहों से एक तरफा रेडियो सिग्नल (L-band) प्राप्त करते हैं। गणना करना: यह उपकरण (जीपीएस रिसीवर) उपग्रहों की दूरी, आपकी स्थिति (अक्षांश, देशांतर, ऊँचाई) और सटीक समय की गणना करता है।

जीपीएस एक निष्क्रिय प्रणाली (Passive system) है, जिसका अर्थ है कि रिसीवर केवल सिग्नल प्राप्त करता है। इससे उपयोगकर्ताओं की संख्या की कोई सीमा नहीं होती और सिस्टम पर कोई बोझ नहीं पड़ता।

श्री. ललित प्रकाश,
दीपस्तंभ.

पर्यावरण

हवाओं में फैली ये कैसी धुंधली बीमारी है,
प्रदूषण से है भरी, हर जगह अब विषैली है

आओ पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ,
सृष्टि में चलो फिर से जीवन लाओ।

प्लास्टिक से तोड़ो नाता, फिर से प्राकृतिक अपनाओ,
तपती इस धरती पर हरियाली फिर से लाओ

वृक्ष जितने लगाओगे, उतना दूर होगा प्रदूषण,
इस धरती पर तभी तो बना रहेगा संतुलन

नदियाँ जो मैली हुई, उनको निर्मल बनाना है,
चिड़ियों की चीख सुनो, घोंसला फिर से बसाना है।

धुआँ उगलती फैक्ट्री पे लगाम लगानी होगी,
अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए धरती बचानी होगी।

शुद्ध हवा में फिर से साँस लेंगे,
सब जीव-जन्तु फिर से मस्त-मगन होंगे,
ख़ुशी में होगा जीवन और जंगल फिर से मंगल होंगे।

श्री. अनिल बालयान,
बैंक ऑफ़ इंडिया.

मेडिकल कोडिंग स्वास्थ्य सेवा उद्योग

मेडिकल कोडिंग स्वास्थ्य सेवा उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें रोगों के निदान, उपचार, प्रक्रियाओं और स्वास्थ्य सेवाओं को मानकीकृत अल्फ़ान्यूमेरिक कोड में परिवर्तित किया जाता है। ये कोड विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों जैसे ICD, CPT और HCPCS Level II से प्राप्त किए जाते हैं। मेडिकल कोडर रोगियों के मेडिकल रिकॉर्ड, डॉक्टरों के नोट्स, प्रयोगशाला रिपोर्टों और अन्य स्वास्थ्य संबंधी दस्तावेजों की समीक्षा करके सही कोड निर्धारित करते हैं। इन कोडों का उपयोग बीमा दावों, बिलिंग, भुगतान प्रतिपूर्ति, स्वास्थ्य डेटा विश्लेषण और रोगी रिकॉर्ड के रखरखाव के लिए किया जाता है। मेडिकल कोडिंग में सटीकता अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि छोटी-सी त्रुटि भी दावों के अस्वीकार होने, वित्तीय नुकसान, अनुपालन संबंधी समस्याओं और रोगी सेवाओं में देरी का कारण बन सकती है।

मेडिकल कोडर की भूमिका के लिए सूक्ष्म विवरणों पर ध्यान देने की क्षमता, विश्लेषणात्मक सोच तथा चिकित्सा शब्दावली, शरीर रचना विज्ञान (Anatomy), शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology), औषधि विज्ञान (Pharmacology) और स्वास्थ्य सेवा नियमों का गहन ज्ञान आवश्यक होता है। मेडिकल कोडर स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं, बीमा कंपनियों और बिलिंग विशेषज्ञों के साथ मिलकर कार्य करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी स्वास्थ्य सेवाओं का सही दस्तावेजीकरण और रिपोर्टिंग हो। उन्हें समय-समय पर बदलने वाले कोडिंग दिशानिर्देशों, भुगतानकर्ता आवश्यकताओं और नियामक मानकों की जानकारी अद्यतन रखनी होती है। इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड और डिजिटल स्वास्थ्य प्रणालियों के बढ़ते उपयोग के कारण मेडिकल कोडिंग अधिक प्रभावी हो गई है, लेकिन इसके साथ तकनीकी दक्षता की आवश्यकता भी बढ़ी है। CPC (Certified Professional Coder) जैसी पेशेवर प्रमाणपत्र कोडर की विश्वसनीयता बढ़ाते हैं और अस्पतालों, क्लीनिकों, बीमा संगठनों तथा स्वास्थ्य सेवा आउटसोर्सिंग कंपनियों में रोजगार के अवसरों को बेहतर बनाते हैं।

मेडिकल कोडिंग उन लोगों के लिए एक आकर्षक और तेजी से विकसित होने वाला करियर विकल्प है जो स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में रुचि रखते हैं लेकिन सीधे रोगी देखभाल में कार्य नहीं करना चाहते। यह पेशा स्वास्थ्य संस्थानों की वित्तीय और परिचालन सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देता है, क्योंकि यह सही प्रतिपूर्ति सुनिश्चित करता है और स्वास्थ्य संबंधी कानूनों एवं नियमों के अनुपालन को बनाए रखता है। स्वास्थ्य सेवा उद्योग के निरंतर विस्तार के साथ कुशल और प्रमाणित मेडिकल कोडरों की मांग भी बढ़ती रहने की संभावना है। आज कई संस्थान घर से काम करने (Work From Home) और दूरस्थ कार्य (Remote Work) के अवसर प्रदान करते हैं, जिससे इस क्षेत्र में कार्यरत पेशेवरों को अधिक लचीलापन और बेहतर कार्य-जीवन संतुलन मिलता है। मेडिकल कोडिंग में सफल करियर बनाने के लिए निरंतर सीखना, प्रमाणन प्राप्त करना और व्यावहारिक अनुभव हासिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रकृति सहाय,
पुत्री-ललित प्रकाश,
दीपस्तंभ.

फाइल की आवाज

फ़ाइल के पन्ने पूछते हैं मुझसे रोज़,
कब तक अंग्रेज़ी में लिखोगे अपना बोझ?

मैं कहता हूँ धीरे से, अब डर नहीं लगता,
हिंदी में लिखता हूँ, तो काम अपना लगता।

हस्ताक्षर मेरा, भाषा मेरी, देश भी मेरा है,
फिर क्यों दफ्तर में हिंदी को बैर है?

राजभाषा का दर्जा मिला, संविधान की मेहर है,
चलो आज से करें वादा, हर पत्र हिंदी का शहर है।

श्री. अजय शर्मा,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

मानव तन

सुख दुख के मेले और जीवन चक्र के घेरे में
बाहर निकल इंसान बैठा है क्यो अंधेरे में फंसा है

आदमी पल भर की खुशियां और झूठ के झमेले में
ज्ञान प्राप्त कर फिर जिंदगी को परख उजाले में

समझदारी है इंसान की इस जीवन को समझने
और समझाने में
सवाँर लो तकदीर फायदा ही फायदा है खुद को झुकाने में

कलयुग है पल भर नहीं लगता बुराइयों को आने में
निरंकार को जान पल भर नहीं लगेगा बुराइयों को जाने में

बहुतों की बदली बहुतों की बदल जाएगी
सतगुरु के एक इशारे में
देर मत कर अच्छे इंसान और
कितना समय लेगा जीवन बनाने में

ऐसा ना हो की जिंदगी गुजर जाए सिर्फ आजमाने में
कौन जानता है फिर कब कृपा होगी मानव तन पाने में

श्री. मोहन सिंह नरुका,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

सीमा पर पहरोदारों को मजबूत करो

सीमा पर पहरोदारों को मजबूत करो ।

बातों से शान्त बुभुक्षा कभी नही होती,
इज्जत को बाहें भिक्षा कभी नहीं होती,
भाषण से कुछ भी कभी नहीं होने वाला,
माला अतने से रक्षा कभी नहीं होती,

केवल भाषण के अभियानो को बन्द करो,
हर पग पर सही सितारों को मजबूत करो ।

वह इज्जत क्या जो जहाँ कही लुट जाती हो,
हर रोज लुटेरो की आंखें ललचाती हो,
वह ताकत कैसी जिसे नहीं चलने आये
वह बुध्दि भला कैसी जो मान गँवाती हो,

है फसल बचानी तो घेरे हिम्मत के दो,
इज्जत खातिर तलवारों को मजबूत करो ।

बात शान्ति की बिना शक्ति के झूठी है,
बात क्रान्ति के बिना भक्ति के झूठी है,
मांग रहा है समय रक्त संगीन, सिपाही,
बात विजय की बिना रक्त के झूठी है,

तूफान हार जाये, पर पाल न झुक पाये,
अपने सारे पतवारों को मजबूत करो ।

साहस न करें कोई भी आँख दिखाने का,
हर ओर पड़ोसी को कोई बहकने का,
जीवन प्यारा है अगर जगत को तो बढ़कर,
साहस न करे कोई भी आग लगाने का,

पागल को जंजीरों मेन कसो, न गलती हो,
सेना की सभी कतारों को मजबूत करो।

श्री. रुपेश कुमार,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

क्या खूब कहा है

ना बहे पसीना तेरे माथे से, ना बहे आँसू तेरे आँखों से,
ना थके तू कभी कामों से, ना झुके तेरे कंधे बोझों से ।।
चलेंगे हम हर कदम साथ, हर काम बाटेंगे हाथों हाथ,
ना दिल मे होगा कोई गम, जब निभाएंगे अपना धर्म ।।

स्वर्ग यहीं बन जाएगा फिर, ना ससुराल ना मायेका होगा,
घर घर होगा खुशाली होगा, ना कुछ कुछ तेरा मेरा होगा ।।
अपनों में सिर्फ प्यार होगा, ना कोई भी उलझन होगा,
व्यक्त चाहे जैसा भी हो, अपनों का साथ हमेशा होगा ।।

श्री. रोहित कुमार राज,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

ऐ जिंदगी

ऐ जिंदगी ,
सपनों में मिला देते हैं थोड़ा सा नमक हकीकत का
हकीकत में जरा सी शक्कर सपनों की मिला देते हैं।
ऐ जिंदगी और भी होंगे तरीके तुझे जीने के
हम आंसुओं में मिला के शहद तनहाई को पिला देते हैं।

जब सो जाती हैं खुशियां चुपचाप सी अंधियारों में
सीने से लगा के गम की लोरी भी सुना देते हैं।
जो भी चाहा था हमने और जो ना पाया तुझसे
हसरत कि उस दुनिया की सपनों में सजा लेते हैं।

ऐ जिंदगी और भी होंगे तरीके तुझे जीने के
हम आंसुओं में मिला के शहद तनहाई को पिला देते हैं।

श्रीमती. अमृता नरसाले,
पत्नी विजय नरसाले,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

जोरू का गुलाम

हाई, हैलो, नमस्ते सलाम,
मैं हुँ एक जोरू का गुलाम।

दिखने में मै सीधा साधा, भोला भाला लगता हुँ,
और किसी की बात नहीं मैं बीवी की ही सुनता हुँ।
दोस्त, मित्र, रिश्तेदारों में हो गया हुँ मैं बदनाम,
ध्यान से देखो मुझको मैं हुँ जोरू का गुलाम।

पत्नी की सेवा में मैं सैदव मन लगाता हुँ,
चाय, नास्ता और डिनर भी उनके लिए बनाता हुँ।
सर की चम्पी और पैरो को दबाता हुँ सुबह-शाम,
अब तो मान गये होगे की मैं हुँ जोरू का गुलाम।

मेरे जैसे यहाँ और भी हैं, पर कहने से डरते है
हाथ जोड़कर बस बीवी के आगे-पीछे फिरते हैं।
घर के अन्दर भीगी बिल्ली बाहर बनते है बलवान,
पर कभी न कहते हैं की यह हैं जोरू का गुलाम।

आखिरी बात मेरी ध्यान से सुन लो,
इस गुलामी की तुम चुन लो।
करो खातिरदारी लेके बीवी जी का नाम,
और गर्व से कह दो की तुम हो जोरू का गुलाम।

श्री. अभिनव कुमार सिंह,
पवन गुब्बारा वेधशाला.

संघर्ष

माता के तप को तपूँ कैसे
भार्या के लिए सजूं कैसे।
विध्वंश मचा है, मन ही मन
भाई की बांह गहूँ कैसे,

हर शाम सहर में जलता हूँ
दिन भर आराम न करता हूँ।
सोच रहा हूँ मन ही मन
पापा का बोझ ढहूँ कैसे

जलना भर मेरा काम रहा
आराम तनिक नहीं करना है।
माता के ताप को तपूँ ऐसे
जैसे कैकई का ललना है।

पापा का बोझ ढहूँ ऐसे
जैसे हर बाप का सपना है।
भार्या के लिए सजें ऐसे
जैसे चन्द्र खिलौना है।

भाई की बांह गहूँ ऐसे
जैसे मैया का गहना है।
इतना भर मेरा काम रहा
जीवन का यही संग्राम रहा।

और तनिक नहीं लड़ना है।
मन मुक्त बदन से रहना है।।

श्री. कुलदीप सिंह,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

आप की यादें

चाँदनी रात है, एक प्यारी सी बात है,
चांहों के साये से जीवन में आस है,
मीलों फासले हैं, दरमियाँ यह तनहाई है,
तेरी यादों की खुशबू ने माफिल सजाई है।

तनहाई में बैठे आपकी हँसी ढूँढता हूँ,
बहती हवाओं में आपकी महक ढूँढता हूँ,
खो जाता हूँ आपकी मोहब्बत के साये में,
आपके आगोश में आने की कसक ढूँढता हूँ।

हर रात चाँद देखता हूँ, जो आपको भी देखता होगा,
अपनी चाँदनी से मेरा हाले बयां करता होगा,
यूं तारों का टिमटिमाना आपकी आँखें याद दिलाता है,
चाँद पर नजर जाता है, तो आपका चेहरा याद आता है।

सोचता हूँ काश! ऐसा होता, ये दूरियाँ न होती,
इस चाँदनी रात मे, आप मेरे साथ होती,
हाथो में आपका हाथ होता, बांहों में बांह होता.
न सिसकियाँ, न तंहाइयाँ होती, जीवन भर साथ होता।

चाँदनी रात है, एक प्यारी सी बात है,
चांहों के साये से जीवन में आस है।

श्री. लक्ष्मण कुमार,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

स्वराज्य की शान, छत्रपति का मान।

पर्वतों में गूंज उठी, स्वराज्य की पुकार,
जीजा माँ का हाथ सिर पर, बना शक्ति का हथियार।

निर्भय चले थे शिवराय, मन में सिंह सा जोर,
वीरता ही सेना थी, छाया था ओज घोर।

माटी की रक्षा के खातिर, मावले बन गए ढाल,
'जय भवानी' कहते ही, शत्रु का हुआ बुरा हाल ।

तलवारें बन गयीं बिजली, रण में मचाया शोर,
डरना हमें आता नहीं, हम हैं शिवाजी की ओर।

हर किला गवाही देता है, हर पत्थर कहे कहानी,
दुश्मन भी थर्राते थे, देख तेवर तूफ़ानी।

महाराज ने सिखाया हमको, स्वराज्य ही है कर्म,
प्राण न्योछावर कर देंगे, यही हमारा धर्म ।

न रुकेंगे, न झुकेंगे, जब तक तन में प्राण,
मैं 'शिवा' का मावला हूँ, स्वराज्य मेरी आन।

अखंड रहे स्वराज्य, खाते हैं हम कसम,
जो टकराएगा हमसे, तोड़ देंगे उसका भ्रम।

छाई है अब खुशहाली, मिट गई सबकी पीर,
सुख-चैन से जी रहा, अब हर एक वीर।

नारी का सम्मान यहाँ, किसान के सिर पर हाथ,
धन्य हुई यह माटी, पाकर शिवबा का साथ।

धर्म-धरा के रक्षक जो, हैं वीरों के सरताज,
नत-मस्तक हो के विश्व पुकारे- जय 'छत्रपति' महाराज !

स्वराज्य के इस तेज से, है सारी दुनिया राजी,
मेरी कलम भी बोल उठी - जय भवानी, जय शिवाजी !

श्रीमती नेत्रा कुमार वाघुळदे,
भारतीय जीवन बीमा निगम.

कीमत

सोचता हूँ क्या कुछ खोया है कुछ पाने में?
दौलत, शोहरत, शान, ओ शौकत पाने में।

बचपन की वो हँसी कहीं छूट गई,
माँ की गोद की नींद भी रूठ गई।
दोस्तों के साथ बीतीं शामें तन्हा हो गई,
सच कहूँ तो मेरी परछाई मुझसे दूर हो गई।

जितना चढ़ा ऊपर, उतना अकेला होता गया,
भीड़ में रहकर भी मैं बस खुद से रोता गया।
दौलत तो बहुत कमाई, पर सुकून न मिला,
जो था अपना, वही सबसे ज़्यादा बेगाना लगा।

गाँव की वो मिट्टी की खुशबू कहीं गुम हो गई,
शाम को आँगन में बैठक भी कम हो गई।
मोबाइल की स्क्रीन पर उँगलियाँ तो चली बहुत,
पर माँ के हाथों को चूमे एक सदी हो गई।

वक्त मिला तो दौलत गिनता रहा,
और दौलत मिली तो वक्त बिक गया।
आईना भी अब मुझसे सवाल करता है,
तू खुद को पाने में खुद से क्यों बिछड़ गया?

रिश्ते सब मतलब के तराज़ू में तुले गए,
अपनों की क़ीमत भी बाज़ार में लगने लगी।
कागज़ के नोटों ने ख़रीद ली सारी खुशियाँ,
पर दिल का चैन खो गया दौलत कमाने में।

मंज़िल मिली तो रास्ते भूल गया,
ताज मिला तो सर उठाना भूल गया।
दुनिया को जीत के क्या पाया मैंने,
जब अपनों को गले लगाना भूल गया।

सोचता हूँ क्या कुछ खोया है कुछ पाने में?
दौलत, शोहरत, शान, ओ शौकत पाने में।

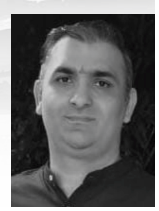

श्री. अनिल बालयान,
बैंक ऑफ़ इंडिया.

पिता-पुत्र

परदेस की नौकरी से बेटा अपने बच्चों सहित
दिवाली पर अपने घर आता है ,
अपने माता-पिता से मिलता है खुशियां मनाता है ।

जिंदगी के उलझे हुए धागे सुलझ ही नहीं पाते कि ... ,
परदेस की नौकरी पर वापिस जाने का वक्त आ जाता है ।

बेटा पिता के साथ रेलवे स्टेशन जाता है और,
एक बार फिर बिछड़ने का वक्त आ जाता है ।

बेटा ट्रेन पकड़ने की जरूरत की तरफ दौड़ता है ,
पिता की तरफ मुड़ मुड़ कर देखता है हाथ हिलाता है ।

पिता स्तब्ध्र सा खड़ा रह जाता है ,
वक्त का वो लम्हा गुजर जाता है ।

पिता डबडबाई आँखों में अश्रु छुपाता हुआ
अपनी दुनिया में लौट जाता है ,
बेटा अपनी जिंदगी की भाग दौड़ में लग जाता है ।

जिंदगी अपनी जंग लड़ती रहती है ,
वक्त कुछ ऐसे करवट बदलता है,
कि पूरे देश में कोरोना राक्षस छा जाता है ।

जिंदगी की रफ्तार थम जाती है, रेलगाड़िया थम जाती है ,
बस , वायुयान सब कुछ प्रतिबंधन हो जाता है ।

फोन पर हाल चाल जानना और
वीडियो कॉल पर मिलना होता है ,
फिर एक दिन पिता के बीमार होने का पता चलता है ।

दिन व दिन पिता कमजोर होता जाता है,
कोरोना काल में उचित इलाज नहीं मिल पाता है।

पिता की हालत खराब होती जाती है,
बेटा नौकरी और कोरोना काल के
प्रतिबंधन में फसा रहता है।

बेटा अपने पिता के अंतिम वक्त में
किसी काम नहीं आता है ,
पिता अपने अंतिम वक्त में बेटे का चेहरा देखना चाहता है ।

हर आहट पर बेटे का ही नाम पुकारता है.
बेटा परदेस मे ही फंसा रहता है ।

पिता अपनी आखिरी सफर पर निकल जाता है,
बेटा वीडियो कॉल पर ही अंतिम विदाई,
अंतिम संस्कार देखता है ।

बेटा अपने जीवन में कभी न भरने वाले
खालीपन के साथ रह जाता है ,
और अपने खाली हाथों को मलता हुआ
अपने अतीत में खो जाता है ।

श्री. ललित प्रकाश,
दीपस्तंभ.

फूल

बच्चे तो बच्चे हैं उन्होंने जो भी किया, क्या वो भूल हैं
नहीं दोस्तों वो तो संसार रूपी बाग के प्यारे प्यारे फूल हैं।

इनकी खेलने की जगह सबसे प्यारी, संसार की धूल हैं
जो हमें प्रभु से प्रसाद के रूप में मिलते हैं, ये वो ही फूल हैं।

ऋषि मुनियों और महात्माओं के मंत्र का जो मूल हैं
इन्ही के फलस्वरूप हरबार जन्म लेते ये ही वो फूल हैं।

जब भी हुआ विनाश इस संसार में, चारों तरफ झूठ,
लड़ाई और शूल हैं इन्हे तो दया से देखो प्यारो,
ये ही तो बचे हुए फूल हैं।

श्री. मोहन सिंह नरुका,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

चाय सी ये ज़िंदगी है

कभी कड़क,कभी मीठी सी, कभी अदरक सी तीखी है,
तो कभी इलायची सी महकी सी।

जब बरसात की बूंदें गिरती हैं, तपते मन को भिगोती हैं,
तब कुल्हड़ की वो सोंधी खुशबू, रूह में यादें पिरोती हैं।

मिट्टी की वो सोंधी महक, ज़िंदगी की सादगी बताती है,
एक गरम प्याली और ये बारिश, हर गम को भुलाती है।

पकौड़ों के संग गुफ्तगू है, और खिड़की पर ठहरा पानी,
चाय की हर चुस्की कहती है, बस यही है ज़िंदगी की कहानी।

श्रीमती सौम्या भार्गव,
बैंक ऑफ़ इंडिया.

सरकारी नौकरी

लगती सभी को प्यारी है सरकारी नौकरी,
हर नौकरी पे भारी है सरकारी नौकरी ।

नौकर भी अपने आप को मालिक समझ रहा,
ऐसी ग़ज़ब खुमारी है सरकारी नौकरी ।

तनख्वाह तो मिलेगी भले काम हो न हो,
इस तरह चमत्कारी है सरकारी नौकरी ।

नेता है एक ओर तो अफ़सर है एक ओर,
दोनो तरफ़ कटारी है सरकारी नौकरी ।

दूल्हे का भाव छूने लगा आसमान को,
लाती दहेज़ भारी है सरकारी नौकरी ।

इंसाफ़ फाइलों में दफ़्न होके रह गया,
इंसाफ़ की सुपारी है सरकारी नौकरी ।

है एक जो अनार तो लाखों मरीज़ हैं,
दुर्लभ दवा ये न्यारी है सरकारी नौकरी ।

अफ़सर से ले के प्यून तक सब दुह रहे इसे,
ये गाय इक दुधारी है सरकारी नौकरी ।

चुटकी में जिसने सारा बजट लुप्त कर दिया
सिस्टम की इक मदारी है सरकारी नौकरी ।

ईमान का है साथ दिया जिसने यहां पर,
उसके लिए कटारी है सरकारी नौकरी ।

शायर का मशवरा है जिसे भूलना नहीं,
जनता की तरफ़दारी है सरकारी नौकरी ।

श्री. ललित प्रकाश,
दीपस्तंभ.

वीर की उड़ान

मुसीबतें आएँगी लाख हज़ार,
वीर तू उठ, कर उनको हँस कर पार।
पर्वतों सी कठिन राह पर न रुक तू न थक तू,
कर हौसला, कर हर मंज़र पार।

तूफानों से डरना क्या,
कश्ती को किनारा खुद ढूँढना है।
वीर तू है, हार न मानने वाला,
तेरी उड़ान के आगे आसमान भी छोटा पड़ना है।

गिर के संभल जाना ही जीत है,
हर ठोकर एक नई सीख है।
रात कितनी भी गहरी हो वीर,
सुबह तेरी ही लाई हुई रौशनी है।

मंज़िल के सपने देख मत,
रास्तों को अपना बना ले।
मुश्किलों से दोस्ती कर ले तू,
कामयाबी खुद तुझे पहचाने।

वीर की उड़ान को यह दुनिया जान ले,
तेरा हौसला तेरी पहचान है यह जान ले।

श्री. अनिल बालयान,
बैंक ऑफ़ इंडिया.

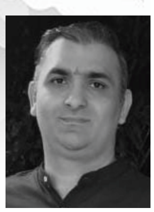

एक विश्वास, एक सहारा

जीवन की राहें रंगीन भी हैं, अनजानी भी, कभी हँसी की
छाँव, कभी कहानी पुरानी भी। कभी सूरज मुस्काए, कभी घटा
बरसाए, कभी पथ सरल, तो कभी आँधी रुक जाए।

फिर भी चलता है मनुष्य, निडर और विवेकवान, कंधों पर
सपने, आँखों में अरमान । सोचता है - 'कल जब में न रहूँ
यहाँ, तो मेरे अपने रहें सदा महकते जहाँ।'

यही सोच बनती है एक बीज की तरह, जो प्रेम से बोया गया,
न किसी नीज की तरह। आज की मिट्टी में वो विश्वास बोता है,
जो कल को ठंडी छाँव देता है।

ये कोई सौदा नहीं, न कोई हिसाब, ये तो है स्नेह का शुद्ध
जवाब। एक मौन वादा, एक सुरक्षित राह,
जो अपनों को दे शांति की चाह।

जब तूफ़ान उठेगा, ये छत थामेगी, जब रात गहराएगी, ये
दीप जलाएगी। जब नाव डोलेगी जीवन की धारा में, ये पतवार
बनेगी विश्वास के किनारा में।

कहता है दिल 'मैं रहूँ या न रहूँ साथ, फिर भी तुम्हें मिले मेरा
हर आशीष, हर बात। मेरा प्रेम रहेगा, तुम्हारा सहारा बनकर,
हर सवेरा उगेगा, मेरे विश्वास तले रहकर।'

'ये बीमा नहीं, एक अमर वचन है प्यारा,
जो कहता है-मेरे न होने पर भी, मैं हूँ तुम्हारा।'

श्रीमती नेत्रा कुमार वाघुळदे,
भारतीय जीवन बीमा निगम.

मैं.. मैं नहीं हूं..

मैं.. मैं नहीं हूं..
मैं हवा हूं, आग हूं, पानी हूं
मैं मिट्टी हूं, आकाश हूं मैं.. मैं नहीं हूं..

मैं फूल हूं, पत्ता हूं मैं बहार हूं
मैं हरियाली हूं, पतझड भी हूं.. पर, मैं.. मैं नहीं हूं..
मैं सागर हूं, लहर हूं, मैं किनारा हूं
कश्ती भी मैं हूं मैं पहाड़ हूं, चट्टान हूं तूफान भी मैं हूं
लेकिन, मैं.. मैं नहीं हूं..

मैं सूरज हूं, तेज हूं, उजाला हूं
अपने ही अंदर सिमटता अंधियारा भी मैं हूं
मैं खोज हूं हर किसी के बाहर भी हूं, भीतर भी मैं हूं
फिरभी, मैं.. मैं नहीं हूं..

तुम ना मुझे पा सकोगे ना खो सकोगे
ना ही हार सकोगे कभी क्योंकि मैं जीत नहीं हूं
मैं.. मैं नहीं हूं..

मैं ही सकती हूं सोच,दृष्टिकोण, या फिर अनुभव
पर मैं अहंकार नहीं हूं मैं अहंकार नहीं हूं
क्योंकि मैं.. मैं नहीं हूं..

मैं रंग,रूप, रक्त, रस से परे हूं
मुझे श्वास ना समझना मैं मौन एहसास हूं मैं हूं?
या मैं मौजूद हूं ही नहीं ! मैं वास्तव हूं या हूं कल्पना!
या मैं सिर्फ यकीन हूं? मैं हूं इकलौता सत्य ..
और यही हैं मेरा सत्य की
मैं.. मैं नहीं हूं..

श्रीमती अमृता नरसाले,
पत्नी विजय नरसाले,
भारतीय तटरक्षक वायु अवस्थान.

माँ, तू ही तो है भगवान मेरी

तुझमें ईश्वर की है छवि, माँ तू ही है भगवान मेरी।
माँ, तू ही तो है भगवान मेरी।

न तेरा जैसा कोई दुनिया में, न तेरा जैसा कोई आएगा,
भगवान को देखा किसने? रूप उसका मैंने तुझमें पाया है।
तेरी ममता का कोई मोल नहीं, न तेरे आँचल सी छाँव कहीं,
माँ, तू ही तो है भगवान मेरी।

सबसे सुंदर, सबसे प्यारी हो तुम,
मुझे दुनिया में लाने वाली हो तुम।
सदा किया प्यार मुझसे, न कभी कोई शिकायत,
मेरी हर खता को हँसकर माफ किया तूने।
तेरे आगे दुनिया की हर खुशी न्योछावर कर दूँ माँ,
फिर भी तेरा एहसान कैसे चुका दूँ,
माँ, तू ही तो है भगवान मेरी।

रोते को हँसाया है तूने, मुसीबतों में संभाला है,
गिरते को उठाया है तूने, हर राह आसान बनाई है।
खुद भूखी सोई, पर मुझे पेट भर खिलाया है,
कैसे बताऊँ माँ, तूने कैसे मुझे पाला है।
बड़ा किया, लायक बनाया, दुनिया के काबिल बनाया,
मेरे सपनों की खातिर अपने सपने भुलाया,
माँ, तू ही तो है भगवान मेरी।

नौकरी के लिए अपने जिगर के टुकड़े को,
अपने से दूर भी किया, हँसकर विदा किया।
पर मुझे पता है माँ, तकिये को भिगोती है हर रात,
हर दिन, हर पल याद करती है मुझे माँ।
तेरी दुआओं से ही तो चलता है ये जहान मेरा,
कैसे तुझे भूल जाऊँ मैं,
माँ, तू ही तो है भगवान मेरी।

श्री. अनिल बालयान,
बैंक ऑफ़ इंडिया.

खुला आसमान

सपनों को आज मेरे खुला आसमान है,
तोड़ने है बंधन सारे पाना सम्मान है ।

लांघ कर दहलीज मैंने
बेड़ियों को तोड़ दिया,
बनी सक्षम आज की नारी
अब डरना छोड़ दिया,
देखता रहेगा जमाना ऐसी
भरी मैंने उड़ान है
सपनों को आज मेरे खुला आसमान है ।

सागरतल भी देख आई
चांद को भी छू लिया,
देश के संरक्षण में
दुशमनों को झुका दिया,
शीतलता भी मेरे अंदर
और छुपा एक तूफान है,
सपनों को आज मेरे खुला आसमान है ।

मुश्किलें आएंगी कई
सफलता की इस राह में,
क्षितिज के भी पार चलूंगी
लक्ष्य की उस चाह में,
मंजिल के और चली
ये एक नारी की दास्तान है,
सपनों को आज मेरे खुला आसमान है ।

सुश्री. प्रणाली प्रमोद गमरे,
केनरा बैंक.

मोहन की मैं लाड़ली

राहें थीं मुश्किल, काँटों भरी डगर थी,
हर मोड़ पर खड़ी, मुसीबतों की सहर थी।
लगा कि अब हारूँगी, टूट जाएगा ये मन,
पर साथ खड़ा था मेरे, वो नन्द का नन्दन।

कितने ही तूफ़ान आए, कश्ती डुबाने को,
तैयार खड़ी थी दुनिया, हस्ती मिटाने को।
पर माँझी बनके मेरा, वो मुरली वाला आया,
लहरों के बीच भी, मुझे किनारा दिलाया।

गर्व से कहती हूँ मैं, हर बाधा से लड़कर,
नसीब वाली हूँ मैं, उस दर पे सिर धरकर।
मैं उसकी शरण में हूँ, वो मेरा रखवाला है,
मेरी बे रंग दुनिया में, मोहन ही उजाला है।

कोई क्या बिगाड़ेगा, मेरा इस जग की भीड़ में,
महफूस हूँ मैं कान्हा, तेरी ममता की नीड़ में।
सारे जग की खुशियाँ, अब मैंने पा ली हैं,
क्योंकि मैं और कोई नहीं, मोहन की मैं लाड़ली हूँ।

श्रीमती सौम्या भार्गव,
बैंक ऑफ़ इंडिया.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति रत्नागिरी के क्षेत्रीय भाषा मराठी में दैनदिनी/कैलेंडर का विमोचन अध्यक्ष महोदय श्री नरेंद्र रघुनाथ देवरे जी तथा ललित प्रकाश, दीप स्तम्भ और श्री राजेश सोनार जी, पवन गुब्बारा वेधशाला के करकमलों से विमोचन किया गया।

प्रकृती सहाय

(AAPC) अमेरिकन अ‍ॅकॅडमी ऑफ प्रोफेशनल कोडर्स

श्रावणी दिनेश वाडेकर

10 वी कक्षा उत्तीर्ण 95.20%

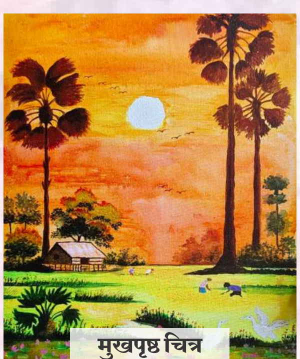

मुखपृष्ठ चित्र

दर्शन कानसे,
बैंक ऑफ़ इंडिया

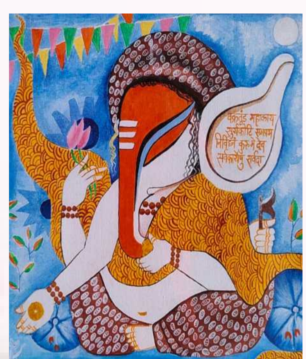

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **60%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एव आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%

10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक),	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**45%**	**35%**	**25%**
				(न्यूनतम अनुभाग)
			सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, “क” क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, “ख” क्षेत्र में 30% और “ग” क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।	

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, शिवाजीनगर, रत्नागिरी 415 639 (महाराष्ट्र)

" सूरज, हवा और पानी; यही है कल की असली कहानी "